सरस्वती-महापूजा

विद्याप्रदायिनी सरस्वती माता

संकलनकर्त्री
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सरस्वती माता की पूजा में हम पढ़ते हैं–

तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।।

वास्तव में हम परम सौभाग्यशाली हैं जो कि हमें तीर्थंकर भगवान की दिव्यध्वनि क्रमपरम्परा से दृष्टिगत हो रही है।

प्रस्तुत पुस्तक "सरस्वती महापूजा" में सरस्वती माता की पूजा, स्तुति, आरती, भजन आदि के साथ महालक्ष्मी पूजन, चक्रेश्वरी पूजन, पद्मावती स्तोत्र, पूजन आदि संकलित हैं।

पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी देव–शास्त्र–गुरु तीनों की ही भक्ति में सभी को लगाए रखती हैं समय–समय पर अनेक प्रकार की पुस्तकों की रचना करके वे सभी के हृदय में ज्ञान की गंगा को प्रवाहित करती रहती हैं इसी शृंखला में पूज्य माताजी की प्रेरणा से संघस्थ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने इस पुस्तक का संकलन किया है पूज्य आर्यिकाश्री के बारे में कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं आप सब स्वयं ही इनके द्वारा रचित नए–नए भजन, आरती, पूजन, चालीसा आदि से भलीभांति परिचित हैं।

तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के प्रथम चातुर्मास समापन एवं दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में श्रीमती आशा जैन ध.प. स्व. श्री नरेन्द्र कुमार जैन एवं उनके सुपुत्र चि. हर्ष जैन (इलाहाबाद) ने ज्ञानदानस्वरूप अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया एतदर्थ संस्थान उनका आभारी है।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

आओ री सुहागन नारी, मंगल गाओ री।
पद्मावती माता की, गोद भराओ री।।

अक्सर ही मंदिरों में महिलाएँ पद्मावती माता का श्रृँगार करते समय इस तरह के भजनों को गाती रहती हैं। दक्षिण भारत में देवियों की पूजा–आराधना का अधिक प्रचलन है। उत्तर भारत में प्रायः प्रत्येक मंदिर में क्षेत्रपाल, पद्मावती, चक्रेश्वरी आदि देवियों की मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। वर्तमान में कुछ लोग कह देते हैं कि देवी–देवताओं की पूजा करना मिथ्यात्व है और आश्चर्य की बात तो यह है कि जो लोग ऐसा कहते हैं वे खुद अन्यत्र देवी–देवताओं को पूजते हुए देखे जाते हैं। जैन परम्परा में शासन देवी–देवताओं को पूजने की विधि प्राचीन समय से ही बताई गई है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी बताती हैं कि सन् १९५८ में अजमेर चातुर्मास के मध्य सेठ भागचन्द जी सोनी ने आ. शिवसागर जी महाराज एवं संघस्थ साधुओं को एक पुस्तक लाकर दिखाई थी जिसमें चक्रेश्वरी देवी की पूजा, नाममंत्र, स्तोत्र आदि संस्कृत भाषा में थे पुनः वैसी पुस्तक एक बार पूज्य माताजी को दक्षिण भारत से प्राप्त हुई उसी के आधार से संघस्थ आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने इस पुस्तक का संकलन किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में सरस्वती देवी की पूजा, संस्कृत स्तोत्र के अतिरिक्त एक हिन्दी स्तुति भी है–

कमलासनी श्रुतधारिणी माता सरस्वती......

इसको पढ़कर सरस्वती माता का श्रृंगार करना चाहिए तथा इसी प्रकार महालक्ष्मी देवी का श्रृंगार करते समय–

लक्ष्मी महादेवी का श्रृंगार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भण्डार भरो जी।।

इस प्रकार की स्तुति पढ़ने से घर में लक्ष्मी का वास होता है इसी क्रम में चक्रेश्वरी माता का शृंगार–पूजन, पद्मावती माता का श्रृंगार आदि करके विधिवत् सभी देवियों की उपासना करनी चाहिए।

वैसे तो हर शुक्रवार को सरस्वती, पद्मावती आदि देवियों की आराधना की जाती है किन्तु "शारदा पक्ष" जो कि आश्विन शु. १ से पूर्णिमा तक रहता है, इन पन्द्रह दिनों में इन देवियों की भक्तिपूर्वक की गई आराधना चिन्तित फल को प्रदान करने वाली होती है।

आप सभी इस पुस्तक के माध्यम से अपने ज्ञान और ऐश्वर्य की वृद्धि करें यही मंगल कामना है।

परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, वात्सल्यमूर्ति
गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का

मंगल-आशीर्वाद

जैनधर्म में तीर्थंकरों के शासन देवी-देवताओं की पूजा करने की प्राचीन परम्परा है। लगभग ३०-३५ वर्ष पूर्व जब मैं दक्षिण भारत में थी तब मैंने वहाँ की महिलाओं में इन देवी-देवताओं के प्रति विशेष भक्ति भावना देखी, देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती थी। बैंगलोर में तो चक्रेश्वरी माता के नाम से एक ''चक्रेश्वरी मन्दिर'' भी है।

इधर उत्तर भारत में भी प्रायः हर मंदिर में क्षेत्रपाल, पद्मावती की मूतियाँ देखने को मिलती हैं लोग बड़ी श्रद्धा से इनकी पूजा-अर्चना करते देखे जाते हैं। दिल्ली जैसी आधुनिक नगरी में भी लोग हर शुक्रवार को लाल मंदिर में पद्मावती देवी की उपासना करने जाते हैं। जब मैंने शारदापक्ष में १५ दिन तक देवियों की आराधना की बात कही तो दिल्ली में एक दिन में कई-कई महिलााएँ आकर खूब भक्तिभाव से शृंगार आदि करती थीं।

मुझे प्रसन्नता है कि मेरी शिष्या आर्यिका चन्दनामती जी ने ''सरस्वती महापूजा'' नामक इस पुस्तक का संकलन करके मेरी भावनाओं को मूर्तरूप प्रदान किया है। मुझे इस बात का गौरव है कि जब भी मेरी जैसी भावना होती है चन्दनामती तत्काल ही मेरी भावना को समझकर भजन, पूजन, चालीसा आदि की रचना कर देती हैं।

इस पुस्तक के माध्यम से देवियों की पूजा-आराधना करके आप सभी अपने धन धान्यादि की वृद्धि करें तथा चन्दनामती जी इसी प्रकार हमेशा अपने ज्ञान के द्वारा भक्तजनों को लाभान्वित करती रहें यही मेरा शुभाशीर्वाद है।

विषय-सूची

क्रम.	पूजन	पृ. सं.
१.	मंगलाचरण एवं सरस्वती अभिषेक	७
२.	सरस्वती स्तोत्र (श्रृंगार)	९
३.	सरस्वती पूजा	११
४.	सरस्वती के १०८ मंत्र	१५
५.	सरस्वती स्तोत्र	१७
६.	सरस्वती माता की स्तुति	१९
७.	सरस्वती माता की आरती	२०
८.	जिनवाणी स्तुति	२१
९.	केवलज्ञान महालक्ष्मी पूजा	२२
१०.	महालक्ष्मी माता की स्तुति	२५
११.	महालक्ष्मी की आरती	२६
१२.	श्रीगोमुखयक्षपूजाविधान	२७
१३.	श्री चक्रेश्वरी माता की पूजन	३०
१४.	श्रीचक्रेश्वरी देवीमन्त्रस्तोत्र	३४
१५.	चक्रेश्वरी माता की आरती	४१
१६.	पद्मावती अभिषेक	४२
१७.	श्री पद्मावती स्तोत्र (भाषा)	४३
१८.	श्री पद्मावती पूजा	४७
१९.	श्री पद्मावती देवी सहस्रनाम बीजाक्षर मन्त्र	५०
२०.	श्री पद्मावती माता की आरती	६६
२१.	क्षेत्रपाल पूजा	६७
२२.	क्षेत्रपाल बाबा की आरती	६८
२३.	अनावृतयक्ष पूजा	६९
२४.	त्रिषष्टिज्ञानसूत्राणि	७०
२५.	भजन	७२

मंगलाचरण

शार्दूलविक्रीडित छन्द-

भाषासर्वमयो ध्वनिर्जिनपतेर्दिव्यध्वनिर्गीयते।
आनन्त्यार्थसुभृत् मनोगततमो हंति क्षणात्प्राणिनः।।
दिव्यस्थानगतामसंख्यजनतामाल्हादयन् निःसृतः।
ते दिव्यध्वनयस्त्रिलोकसुखदाः कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।१।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सरस्वती अभिषेक

जलाभिषेक-

व्योमापगादितीर्थोद्भवेनातिस्वच्छवारिणा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम् ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पवित्रतरजलेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।। उदक.

इक्षुरसाभिषेक-

सद्यः पीलितपुण्ड्रेक्षुरसेन शर्करादिना।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम् ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं इक्षुरसेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक..

घृताभिषेक-

कनत्काञ्चनवर्णेन सद्यःसंतप्तसर्पिषा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम् ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।। उदक......

दुग्धाभिषेक-

सद्गोक्षीरप्रवाहेन शुक्लध्यानाकरेण वा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुग्धेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.......

दध्नाभिषेक-

हिमपिण्डसमानेन दध्ना पुण्यफलेन वा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम् ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दध्नेतन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.......

चतुष्कोण कलश जलाभिषेक-

हेमोत्पन्नचतुः कुम्भैर्नानातीर्थाम्बुवारिभिः।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम् ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुष्कोणकलशेन सरस्वती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक..

सुगन्धित जलाभिषेक-

दिव्यद्रव्यौघमिश्रेण सुगन्धेनाच्छवारिणा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः सुगन्धित जलेन सरस्वतीदेवीं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक......

पूर्णार्घ्य-

इतिश्रीभारती जैनीं येऽभिषिच्य यजन्ति ते।
विज्ञाय द्वादशाङ्गानि वै स्युः केवलिनोऽचिरात् ।।

उदक.....जिनगृहे जिनवाच महंयजे। ॐ ह्रीं सरस्वती देव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती स्तोत्र

(सरस्वती माता के शृंगार के समय पढ़ें)

चन्द्रार्क-कोटिघटितोज्वल-दिव्य-मूर्ते !
श्रीचन्द्रिका-कलित-निर्मल-शुभ्रवस्त्रे !
कामार्थ-दायि-कलहंस-समाधिरूढे ।
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।१।।

(श्वेत साड़ी पहनाना)

देवा सुरेन्द्र नतमौलिमणि प्ररोचि,
श्री मंजरी-निविड-रंजित-पादपद्मे !
नीलालके ! प्रमदहस्ति-समानयाने!
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।२।।
केयूरहार-मणिकुण्डल-मुद्रिकाद्यैः,
सर्वाङ्गभूषण-नरेन्द्र-मुनीन्द्र-वंद्ये !
नानासुरत्न-वर-निर्मल-मौलियुक्ते !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।३।।

(हार, कुंडल, मुद्रिका, मुकुट आदि पहनाना)

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां,
कांच्याश्च झंकृत-रवेण विराजमाने !
सद्धर्म-वारिनिधि-संतति-वर्द्धमाने !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। ४।।

(करधनी पहनाना)

कंकेलिपल्लव-विनिंदित-पाणियुग्मे !
पद्मासने दिवस-पद्मसमान-वक्त्रे !
जैनेन्द्र-वक्त्र-भवदिव्य-समस्त-भाषे !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। ५।।
अर्द्धेन्दु मण्डितजटा ललित स्वरूपे !
शास्त्र-प्रकाशिनि-समस्त-कलाधिनाथे !
चिन्मुद्रिका-जपसराभय-पुस्तकांङ्के !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि!।।६।।

(हाथ में माला देना, वेष्टन से लपेट कर पुस्तक सामने रखना)

डिंडीरपिंड-हिमशंखसिता-भ्रहारे!
पूर्णेन्दु-बिम्बरुचि-शोभित-दिव्यगात्रे !
चांचल्यमान मृगशावललाट नेत्रे !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।।७।।

(कज्जल तथा कुंकुम लगाना)

पूज्ये पवित्रकरणोन्नत कामरूपे!
नित्यं फणीन्द्र-गरुडाधिप-किन्नरेन्द्रैः!
विद्याधरेन्द्र-सुरयक्ष-समस्त-वृन्दैः,
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि !।।८।।

(सरस्वती को नमस्कार करना)

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चल-भावेन , पूजनीया सरस्वती।।२।।
श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञानतिमिरं हन्ति, विद्या-बहुविकासिनी।।१०।।
सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कन्ध-समारूढा, वीणा-पुस्तक-धारिणी।।११।।

(वीणा हाथ में देना)

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदादेवी, चतुर्थं हंसगामिनी।।१२।।
पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरी तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्ता, अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।१३।।
नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत् ।।१४।।
वाणी त्रयोदशं नाम, भाषा चैव चतुर्दशं।
पंचदशं श्रुतदेवी च , षोडशं गौर्निगद्यते।।१५।।
एतानि श्रुतनामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत् ।। १६।।
सरस्वती ! नमस्तुभ्यं, वरदे ! कामरूपिणि!
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।१७।।

(पुष्पांजलि क्षेपण करना)

।।इति श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम्।।

सरस्वती पूजा

रचयित्री—गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी

जिनदेव के मुख से खिरी, दिव्यध्वनी अनअक्षरी।
गणधर ग्रहण कर द्वादशांगी, ग्रंथमय रचना करी।।
इन अंग पूरब शास्त्र के ही, अंश ये सब शास्त्र हैं।
उस जैनवाणी को जजूँ, जो ज्ञान अमृतसार है।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक—चामर छन्द

जैन साधु चित्त सम, पवित्र नीर ले लिया।
स्वर्ण भृंग में भरा, पवित्र भाव मैं किया।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जलं.....।

केशरादि को घिसाय, स्वर्ण पात्र में भरी।
ताप पाप शांति हेतु, पूजहूँ इसी घरी ।। द्वादशांग०।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै चन्दनं....।

चन्द्ररश्मि के समान, धौत स्वच्छ शालि हैं।
पुंज को चढ़ावते, मिले गुणों कि माल है।। द्वादशांग०।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अक्षतं....।

मोगरा गुलाब चंप केतकी चुनायके ।
स्वात्म सौख्य प्राप्त होय, पुष्प को चढ़ावते।। द्वादशांग०।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै पुष्पं...।

लड्डुकादि व्यंजनों से, थाल को भराय के।
ज्ञानदेवता समीप, भक्ति से चढ़ाय के।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै नैवेद्यं...।

दीप में कपूर ज्वाल, आरती उतारहूँ।
ज्ञानपूर जैन भारती, हृदय में धारहूँ।।द्वादशांग०।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै दीपं...।

धूप ले दशांग, अग्निपात्र में हि खेवते।
कर्म भस्म हो उड़े, सुगंधि को बिखेरते।।द्वादशांग०।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै धूपं...।

सेब संतरा अनार, द्राक्ष थाल में भरें।
मोक्ष सौख्य हेतु शास्त्र, के समीप ले धरें।। द्वादशांग०।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै फलं...।

वारि गंध शालि पुष्प, चरु सुदीप धूप ले।
सत्फलों समेत अर्घ्य, से जजें सुयश मिले। द्वादशांग०।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अर्घ्यं...।

स्वर्ण भृंग नाल से, सुशांतिधार देय के।
विश्वशांति हो तुरंत, इष्ट सौख्य देय के।। द्वादशांग०।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

गंध से समस्तदिक् , सुगंध कर रहे सदा।
पुष्प को समर्पिते, न दुःख व्याधि हो कदा।। द्वादशांग०।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिं।

जाप्य—ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगाय नमः।

जयमाला

दोहा

द्वादशांग हे वाङ्मय ! श्रुतज्ञानामृतसिंधु।
गाऊँ तुम जयमालिका, तरूं शीघ्र भवसिंधु।।१।।

शंभु छन्द

जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, जो अनक्षरी ही खिरती है।
जय जय जिनवाणी श्रोताओं को, सब भाषा में मिलती है।
जय जय अठरह महाभाषाएं, लघु सात शतक भाषाएं हैं।
फिर भी संख्यातों भाषा में, सब समझे जिनमहिमा ये हैं।।२।।
जिनदिव्यध्वनी को सुनकर के, गणधर गूँथें द्वादश अंग में।
बारहवें अंग के पाँच भेद, चौथे में चौदह पूर्व भणें।।
पद इक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख अठावन सहस पाँच।
मैं इनका वंदन करता हूँ, मेरा श्रुत में हो पूरणांक।।३।।
इक पद सोलह सौ चौंतिस कोटी, और तिरासी लाख तथा।
है सात हजार आठ सौ अट्ठासी, अक्षर जिन शास्त्र कथा।।
इतने अक्षर का इक पद तब, सब अक्षर के जितने पद हैं।
उनमें से शेष बचें अक्षर, वह अंगबाह्य श्रुत नाम लहे।।४।।
जो आठ कोटि इक लाख आठ, हज्जार एक सौ पचहत्तर।
चौदह प्रकीर्णमय अंगबाह्य के, इतने ही माने अक्षर।।
यह शब्दरूप और ग्रन्थरूप, सब द्रव्यश्रुत कहलाता है।
जो ज्ञानरूप है आत्मा में, वह कहा भावश्रुत जाता है। ।।५।।
जिनको केवलज्ञानी जाने, पर वच से नहिं कह सकते हैं।
ऐसे पदार्थ सु अनंतानंत, जो तीन भुवन में रहते हैं।।
उनसे भी अनंतवें भाग प्रमित, वचनों से वर्णित हो पदार्थ।
उन प्रज्ञापनीय से भी अनन्तवें, भाग कथित श्रुत में पदार्थ।।६।।
फिर भी यह श्रुत सब द्वादशांग, सरसों सम इसका आज अंश।
उनमें से भी लवमात्र ज्ञान, हो जावे तो भी जन्म धन्य।।

यह जिन आगम की भक्ती ही, निज पर का भान कराती है।
यह भक्ती ही श्रुतज्ञान पूर्णकर, श्रुतकेवली बनाती है।।७।।
श्रुतज्ञान व केवलज्ञान उभय, ज्ञानापेक्षा हैं सदृश कहे।
श्रुतज्ञान परोक्ष लखे सब कुछ, बस केवलज्ञान प्रत्यक्ष लहे।।
अंतर इतना ही तुम जानो, इसलिए जिनागम आराधो।
स्वाध्याय मनन चिंतन करके, निज आत्म सुधारस को चाखो।।८।।
इस ढाईद्वीप में कर्मभूमि, इक सौ सत्तर जिनवर होते।
उन सबकी ध्वनि जिन आगम है, इससे जन अघमल को धोते।।
जिनवचपूजा जिनपूजा सम, यह केवलज्ञान प्रदाता है।
नित पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, यह भव्यों को सुखदाता है।।९।।
है नाम भारती सरस्वती, शारदा हंसवाहिनी तथा।
विदुषी वागीश्वरि और कुमारी, ब्रह्मचारिणी सर्वमता।।
विद्वान् जगन्माता कहते, ब्राह्मणी व ब्रह्माणी वरदा।
वाणी भाषा श्रुतदेवी गौ, ये सोलह नाम सर्व सुखदा।।१०।।
हे सरस्वती ! अमृतझरिणी, मेरा मन निर्मल शांत करो।
स्याद्वाद सुधारस वर्षाकर, सब दाह हरो मन तृप्त करो।।
हे जिनवाणी माता मुझ, अज्ञानी की नित रक्षा करिये।
दे केवल ''ज्ञानमती'' मुझको, फिर भले उपेक्षा ही करिये।।११।।

दोहा

भूत भविष्यत् संप्रति, त्रैकालिक जिनशास्त्र।
त्रिकरण शुद्धी मैं नमूँ, मिले सिद्धि सर्वार्थ।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा

सब भाषामय सरस्वती, जिनकन्या जिनवाणि।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो, माता जगकल्याणि।।१।।

इत्याशीर्वादः।

सरस्वती देवी के १०८ मंत्र

अर्हद्वक्त्राब्जसंभूतां, गणाधीशावतारितां।

महर्षिधारितां स्तोष्ये, नाम्नामष्टशतेन गां।।१।।

१. ॐ ह्रीं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नमः २. ॐ ह्रीं द्वादशांगिन्यै नमः ३. ॐ ह्रीं सर्वभाषायै नमः ४. ॐ ह्रीं वाण्यै नमः ५. ॐ ह्रीं शारदायै नमः ६. ॐ ह्रीं गिरे नमः ७. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः ८. ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः ९. ॐ ह्रीं वाग्देवतायै नमः १०. ॐ ह्रीं देव्यै नमः ११. ॐ ह्रीं भारत्यै नमः १२. ॐ ह्रीं श्रीनिवासिन्यै नमः १३. ॐ ह्रीं आचारसूत्रकृतपादायै नमः १४. ॐ ह्रीं स्थानतुर्यांगजंघायै नमः १५. ॐ ह्रीं व्याख्या-प्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग चारुरूभासुरायै नमः १६. ॐ ह्रीं उपासकांग सन्मध्यायै नमः १७. ह्रीं अंतकृद्दशांगनाभिकायै नमः १८. अनुत्तरोपपत्तिदशप्रश्नव्याकरणस्तन्यै नमः १९. ॐ ह्रीं विपाकसूत्रसद्वक्षसे नमः २०. ॐ ह्रीं दृष्टिवादांगकंधरायै नमः २१. ॐ ह्रीं परिकर्ममहासूत्रविपुलांसविराजितायै नमः २२. ॐ ह्रीं चन्द्र-मार्तंडप्रज्ञप्तिभास्वद्बाहुसुबल्ल्यै नमः२३.ॐह्रीं जम्बूद्वीप सागरप्रज्ञप्तिसत्करायै नमः२४. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिविभ्राजत्पंचशाखामनोहरायै नमः २५. ॐ ह्रीं पूर्वानुयोगवदनायै नमः २६. ॐ ह्रीं पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः २७. ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसन्नासायै नमः २८. ॐ ह्रीं अग्रायणीयदंतायै नमः २९. ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादोष्ठायै नमः ३०. ॐ ह्रीं चित्प्रवादकपोलायै नमः ३१. ॐ ह्रीं सत्यप्रवादरसनायै नमः ३२. ॐ ह्रीं आत्मप्रवादमहाहनवे नमः ३३. ॐ ह्रीं कर्मप्रवादसत्तालवे नमः ३४. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानललाटायै नमः ३५.ॐ ह्रीं विद्यानुवादकल्याणनामधेयसुलोचनायै नमः ३६. ॐ ह्रीं प्राणावायक्रियाविशालपूर्वभ्रूधनुर्लतायै नमः ३७. ॐ ह्रीं लोकबिन्दुमहासारचूलिकाश्रवणद्वयायै नमः ३८. ॐ ह्रीं स्थलगाख्यलसच्छीर्षायै नमः ३९. ॐ ह्रीं जलगाख्यमहाकचायै नमः ४०. ॐ ह्रीं मायागतसुलावण्यायै नमः ४१. ॐ ह्रीं रूपगाख्यसुरूपिण्यै नमः ४२. ॐ ह्रीं आकाशगतसौंदर्यायै नमः ४३. ॐ ह्रीं श्रीकलापि-सुवाहनायै नमः ४४. ॐ ह्रीं निश्चयव्यवहारदृङ्.नूपुरायै नमः ४५. ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः ४६. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः ४७. ॐ ह्रीं महोज्ज्वलायै नमः ४८. ॐ ह्रीं नैगमामोघकेयूरायै नमः ४९. ॐ ह्रीं संग्रहानघचोलकायै नमः ५०. ॐ ह्रीं व्यवहारोद्घकटकायै नमः ५१. ॐ ह्रीं ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः ५२. ॐ ह्रीं शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः ५३. ॐ ह्रीं समभिरुढ़महांकुशायै नमः ५४. ॐ ह्रीं एवंभूतसन्मुद्रायै नमः ५५. ॐ ह्रीं दशधर्ममहाम्बरायै नमः ५६. ॐ ह्रीं

जपमालालसद्हस्तायै नमः ५७. ॐ ह्रीं पुस्तकांकितसत्करायै नमः ५८. ॐ ह्रीं नयप्रमाणताटंकायै नमः ५९. ॐ ह्रीं प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः ६०. ॐ ह्रीं केवलज्ञानमुकुटायै नमः ६१. ॐ ह्रीं शुक्लध्यानविशेषकायै नमः ६२. ॐ ह्रीं स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नमः ६३. ॐ ह्रीं चिदुपादेयभाषिण्यै नमः ६४. ॐ ह्रीं अनेकांतात्मकानंदपद्मासननिवासिन्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं सप्तभंगीसितच्छत्रायै नमः ६६. ॐ ह्रीं नयषट्कप्रदीपिकायै नमः ६७. ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिकनयानूनपर्यायार्थिकचामरायै नमः ६८. ॐ ह्रीं कैवल्यकामिन्यै नमः ६९. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मय्यै नमः ७०. ॐ ह्रीं वाङ्.मयरूपिण्यै नमः ७१. ॐ ह्रीं पूर्वापराविरुद्धायै नमः ७२. ॐ ह्रीं गवे नमः ७३. ॐ ह्रीं श्रुत्यै नमः ७४. ॐ ह्रीं देवाधिदेवतायै नमः ७५. ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलायै नमः ७६. ॐ ह्रीं भव्यशरण्यायै नमः ७७. ॐ ह्रीं सर्ववंदितायै नमः ७८. ॐ ह्रीं बोधमूर्तये नमः ७९. ॐ ह्रीं शब्दमूर्तये नमः ८०. ॐ ह्रीं चिदानन्दैकरूपिण्यै नमः ८१. ॐ ह्रीं शारदायै नमः ८२. ॐ ह्रीं वरदायै नमः ८३. ॐ ह्रीं नित्यायै नमः, ८४. ॐ ह्रीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदायै नमः ८५. ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः ८६. ॐ ह्रीं विश्वरूपायै नमः ८७. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः ८८. ॐ ह्रीं शुभंकर्यै नमः ८९. ॐ ह्रीं हितंकर्यै नमः ९०. ॐ ह्रीं श्रीकर्यै नमः ९१. ॐ ह्रीं शंकर्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं सत्यै नमः ९३. ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयंकर्यै नमः ९४. ॐ ह्रीं शिवंकर्यै नमः ९५. ॐ ह्रीं महेश्वर्यै नमः ९६. ॐ ह्रीं विद्यायै नमः ९७. ॐ ह्रीं दिव्यध्वन्यै नमः ९८. ॐ ह्रीं मात्रे नमः ९९. ॐ ह्रीं विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः १००. ॐ ह्रीं कलायै नमः १०१. ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः १०२. ॐ ह्रीं दीप्तायै नमः १०३. ॐ ह्रीं सर्वशोकप्रणाशिन्यै नमः १०४. ॐ ह्रीं महर्षिधारिण्यै नमः १०५. ॐ ह्रीं पूतायै नमः १०६. ॐ ह्रीं गणाधीशावतारितायै नमः १०७. ॐ ह्रीं ब्रह्मलोकस्थिरावासायै नमः १०८. ॐ ह्रीं द्वादशाम्नाय देवतायै नमः।

इदमष्टोत्तरशतं, भारत्याः प्रतिवासरं।
यः प्रकीर्तयते भक्त्या, स वै वेदांतगो भवेत् ।।१।।
कवित्वं गमकत्वं च , वादितां वाग्मितामपि।
समाप्नुयादिदं स्तोत्र-मधीयानो निरंतरं।।२।।
आयुष्यं च यशस्यं च, स्तोत्रमेतदनुस्मरन् ।
श्रुतकेवलितां लब्ध्वा, सूरिर्ब्रह्म भजेत्परं।।४।।

।। इति।।

सरस्वती स्तोत्र

बारह अंगंगिज्जा, दंसणतिलया चरित्तवत्थहरा।
चोद्दसपुव्वाहरणा, ठावे दव्वाय सुयदेवी।।१।।
आचारशिरसं सूत्र, कृतवक्त्रां सुकंठिकाम् ।
स्थानेन समवायांग-व्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम् ।।२।।
वाग्देवतां ज्ञातृकथो-पासकाध्ययनस्तनीम् ।
अंतकृद्दशसन्नाभि-मनुत्तरदशांगतः।।३।।
सुनितंबां सुजघनां-प्रश्नव्याकरणश्रुतात् ।
विपाकसूत्रदृग्वाद-चरणां चरणांबराम् ।।४।।
सम्यक्त्वतिलकां पूर्व-चतुर्दशविभूषणाम् ।
तावत्प्रकीर्णकोदीर्ण-चारुपत्रांकुरश्रियम्।।५।।
आप्तदृष्टप्रवाहौघ-द्रव्यभावाधिदेवताम् ।
परब्रह्मपथादृप्तां, स्यादुक्तिं भुक्तिमुक्तिदाम् ।।६।।
निर्मूलमोहतिमिरक्षपणैकदक्षं,
न्यक्षेण सर्वजगदुज्जवलनैकतानम् ।
सोषेस्व चिन्मयमहो जिनवाणि ! नूनं,
प्राचीमतो जयसि देवि ! तदल्पसूतिम् ।।७।।
आभवादपि दुरासदमेव,
श्रायसं सुखमनन्तमचिंत्यम् ।
जायतेऽद्य सुलभं खलु पुंसां,
त्वत्प्रसादात् इहांब ! नमस्ते।।८।।
चेतश्चमत्कारकरा जनानां,
महोदयाश्चाभ्युदयाः समस्ताः।
हस्ते कृताः शस्तजनैः प्रसादात्,
तवैव लोकांब ! नमोस्तु तुभ्यम् ।।९।।
सकलयुवतिसृष्टेरंब ! चूड़ामणिस्त्वं,
त्वमसि गुणसुपुष्टेर्धर्मसृष्टेश्च मूलम् ।
त्वमसि च जिनवाणि ! स्वेष्टमुक्त्यंगमुख्या,
तदिह तव पदाब्जं भूरिभक्त्या नमामः।।१०।।

अर्थ- श्रुतदेवी के बारह अंग हैं, सम्यग्दर्शन यह तिलक है चारित्र यह उनका वस्त्र है, चौदह पूर्व उनके आभरण हैं ऐसी कल्पना करके श्रुतदेवी की स्थापना करनी चाहिए।

बारह अंगों में से प्रथम जो "आचारांग" है, वह श्रुतदेवी—सरस्वती देवी का मस्तक है, "सूत्रकृतांग" मुख है, "स्थानांग" कण्ठ है, "समवायांग" और "व्याख्याप्रज्ञप्ति" ये दोनों अंग उनकी दोनों भुजायें हैं, 'ज्ञातृकथांग" और "उपासकाध्ययनांग" ये दोनों अंग उस सरस्वती देवी के दो स्तन हैं, "अंतकृद्दशांग" यह नाभि है, 'अनुत्तरदशांग" श्रुतदेवी का नितम्ब है, "प्रश्नव्याकरणांग" यह जघनभाग है, "विपाकसूत्रांग"और "दृष्टिवादांग" ये दोनों अंग उन सरस्वती देवी के दोनों पैर हैं। "सम्यक्त्व" यह उनका तिलक है। चौदह पूर्व अलंकार हैं और "प्रकीर्णक श्रुत" सुन्दर बेल बूटे सदृश हैं। ऐसी कल्पना करके यहाँ पर द्वादशांग जिनवाणी को सरस्वती देवी के रूप में लिया गया है।

श्री जिनेन्द्रदेव ने सर्व पदार्थों की सम्पूर्ण पर्यायों को देख लिया है, उन सर्व द्रव्य पर्यायों की यह "श्रुतदेवता" अधिष्ठात्री देवी हैं अर्थात् इनके आश्रय से पदार्थों की सर्व अवस्थाओं का ज्ञान होता है। परम ब्रह्म के मार्ग का अवलोकन करने वाले लोगों के लिए यह स्याद्वाद के रहस्य को बतलाने वाली है तथा भव्यों के लिए भुक्ति और मुक्ति को देने वाली ऐसी यह सरस्वती माता है।

अर्थ—जो चिन्मय ज्योति सम्पूर्ण मोहरूपी अंधकार को नष्ट करने वाली है और सर्व जगत् को प्रकाशित करने वाली है। हे जिनवाणी मातः! हे सरस्वति देवि! ऐसी चिन्मय ज्योति को आप उत्पन्न करने वाली हो इसलिए आपने अल्प प्रकाश धारक सूर्य को जन्म देने वाली ऐसी पूर्व दिशा को जीत लिया है।

अनादि काल से संसार में दुर्लभ ऐसा अचिन्त्य और अनन्त मोक्ष सुख है, आपके प्रसाद से वह मनुष्यों को प्राप्त हो जाता है इसलिए हे मातः! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे मातः! अंतरंग को आश्चर्यचकित करने वाले जो स्वर्गादि के समस्त अभ्युदय ऐश्वर्य हैं वे सब आपके प्रसाद से लोगों को प्राप्त हो जाते हैं इसलिए मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे अम्ब! आप सम्पूर्ण स्त्रियों की सृष्टि में चूड़ामणि हो। आपसे ही धर्म की और गुणों की उत्पत्ति होती है। आप मुक्ति के लिए प्रमुख कारण हो, इसलिए मैं अतीव भक्तिपूर्वक आपके चरणकमलों को नमस्कार करता हूँ।

यह स्तोत्र प्रतिष्ठातिलक से लिया है एवं जयधवला टीका में भी ऐसी गाथायें हैं।

सरस्वती माता की स्तुति
(श्रृंगार करते समय यह स्तुति पढ़ें)

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

शेर छन्द-

कमलासिनी श्रुतधारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।
है द्वादशांग रूप से निर्मित तेरी काया।
सम्यक्त्व तिलक माथे पे चारित्र की छाया।।
विद्वानों से भी पूज्य तुम माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।१।।
जिनवर की मूर्ति तेरे मस्तक पे राजती।
वन्दन करें जो उनकी ज्ञान शक्ति जागती।।
हे श्वेतवस्त्र धारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।२।।
हे शारदा तू ज्ञान की गंगा बहाती है।
वागीश्वरी तू ब्रह्मचारिणी कहाती है।।
कर में है वीणा पुस्तक माला सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।३।।
जो भी तेरी आराधना में लीन होता है।
मिथ्यात्वतिमिर हटा ज्ञान लीन होता है।।
है ''चन्दना'' तुम पद में नत माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।४।।

❖❖❖❖❖❖

सरस्वती माता की आरती

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

आरति करो रे,
जिनवाणी माता सरस्वती की, आरति करो रे।
द्वादशांगमय श्रुतदेवी का, श्रेष्ठ तिलक सम्यग्दर्शन।
वस्त्र धारतीं चारित के, चौदह पूरब के आभूषण।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
आकार सहित उन श्रुतदेवी की, आरति करो रे।। १।।
इनके आराधन से ज्ञानावरण कर्म क्षय होता है।
मति श्रुत ज्ञान प्राप्त होकर, अज्ञान स्वयं व्यय होता है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीर्थंकर प्रभु की दिव्यध्वनि की, आरति करो रे।। २।।
मनपर्ययज्ञानी गणधर भी, श्रुत आराधन करते हैं।
तभी घातिया कर्म नाशकर, केवलज्ञानी बनते हैं।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
कैवल्यमयी शीतलवाणी की, आरति करो रे ।। ३।।
मुनि के अंग पूर्व की महिमा, तो आगम में मिलती है।
सम्यग्दृष्टि आर्यिका ग्यारह, अंगों को पढ़ सकती है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
सौंदर्यवती माँ सरस्वती की, आरति करो रे।।४।।
शुभ्र वस्त्र धारिणी हंसवाहिनी सरस्वती माता हैं।
शुभ्र ज्ञानकिरणों से युत, ''चंदना'' यही श्रुतमाता हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्रुतज्ञान समन्वित सरस्वती की, आरति करो रे।।५।।

जिनवाणी स्तुति

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

हे सरस्वती माता, अज्ञान दूर कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।
श्रुत का भण्डार भरा, तेरे ज्ञान की गंगा में।
जन मन श्रृंगार करा, गुरुवर मुनि चन्दा ने।।
श्रृंगार सहित माता, श्रुतज्ञान पूर्ण कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।१।।
प्रभु वीर की वाणी सुन, गणधर ने संवारा है।
मुनिगण उस पथ पर चल, निज ज्ञान सुधारा है।
निज ज्ञान किरण दाता, आलोक ज्ञान भर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।२।।
चंदन चंदा गंगा, तन शीतल कर सकते।
मुक्ता मालाएं भी, नहिं मन को हर सकते ।।
''चंदना'' सभी जग को, शारद मां का वर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर्ण भर दो।।३।।

केवलज्ञान महालक्ष्मी पूजा

रचयित्री—गणिनी ज्ञानमती माताजी

स्थापना

गीता छन्द

कैवल्यज्ञान महान लक्ष्मी, त्रय जगत में मान्य है।
सब लोक और अलोक जिसमें, एक अणु समान है।।
जिस चाह से सब साधुगण, भी सेवते परमात्म को।
उस महालक्ष्मी को जजूँ, करके मुदा आह्वान को।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मी ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीकेवलज्ञानमहालक्ष्मी ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं–नरेन्द्र छन्द

गंगानदि का पावन जल ले, कंचनभृंग भरूँ मैं।
ज्ञानभानु गुण पूजन करके, भव भव त्रास हरूँ मैं।।
केवलज्ञान महालक्ष्मी को, नित पूजूँ हरषाऊँ।
सुख संपति सौभाग्य प्राप्तकर, शिवलक्ष्मी को पाऊँ।।१।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

अष्टगंध कंचन के द्रवसम, कनक कटोरी भरिये।
ज्ञानसूर्य का अर्चन करके, पूर्ण शांति को वरिये।।केवल.।।२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै संसारतापविनाशनाय चंदनं.........।

सिंधुफेन सम उज्जवल अक्षत, धौत अखंडित लाऊँ।
पूरण गुणमणि अर्चन हेतू, रुचि से पुंज चढ़ाऊँ।।केवल.।।३।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.........।

वकुल मालती पारिजात के, पुष्प सुगंधित लाऊँ।
मदन विनाशक ज्ञानभानु की, पूजा नित्य रचाऊँ।।केवल.।।४।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै कामबाणविनाशनाय पुष्पं.......।

मोतीचूर सु लाडू घेवर, फेनी आदि बनाके।
क्षुधा वेदनी दूर करन को, जजूँ ज्ञान गुण गाके।।केवल.।।५।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं......।

घृत दीपक कर्पूर ज्योति से, करूँ आरती रुचि से।
अंतर में श्रुतज्ञान पूर्ण कर, जजूँ भारती मुद से।।केवल.।।६।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.......।
धूप सुगंधित अग्नि पात्र में, खेऊँ कर्म जलाऊँ।
परमज्योति की पूजा करके, सौख्य अपूरब पाऊँ।।केवल.।।७।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं......।
सेव आम्र अंगूर फलों से, पूजूँ हर्ष बढ़ाऊँ।
ज्ञानज्योति का अर्चन करके, मोक्ष महाफल पाऊँ।।केवल.।।८।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै मोक्षफलप्राप्तये फलं......।
जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल लाऊँ।
जिनगुण लक्ष्मी की पूजाकर, रत्नत्रयनिधि पाऊँ।।केवल.।।९।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.......।

सोरठा

ज्ञानमहानिधि हेतु, ज्ञान महालक्ष्मी भजूँ।
शांतीधारा देत, आत्यंतिक शांती वरूँ।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के वर पुष्प, लेय महालक्ष्मी जजूँ।
पुष्पांजलि से शीघ्र, प्राप्त करूँ सुख संपदा।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै नमः।

जयमाला

दोहा

पूर्णज्ञान लक्ष्मी महा, मुक्ति सहेली सिद्ध।
गाऊँ जयमाला अबे, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।१।।

चाल–हे दीनबंधु---------

जय जय अनंत गुण समूह सौख्य करंता।
जय जय श्री अरिहंत घातिकर्म के हंता।।
जय जय अनंतदर्श ज्ञानवीर्य सुख भरें।
जय जय समवसरण विभूति सर्व निधि धरें।।२।।

केवलरमा को सेवतीं संपूर्ण ऋद्धियाँ।
उस आगे आगे दौड़ती हैं सर्व सिद्धियाँ।।
सब भूत भविष्यत् व वर्तमान को लखें।।
पर्याय सभी गुण सभी तत्काल इव दिखें।।३।।
दर्पण समान स्वच्छज्ञान में जगत् दिखे।
त्रैलोक्य अरु अलोक प्रतिबिम्ब सम दिपे।।
संपूर्ण प्रदेशों से दर्शज्ञान प्रगटता।
व्यवधान रहित ज्ञान अतीन्द्रिय विलसता।।४।।
पंचेन्द्रियाँ औ मन भी सहायक नहीं वहाँ।
कैवल्यज्ञान इसी से असहाय है यहाँ।।
प्रतिपक्ष रहित एक अकेला स्वतंत्र है।
इससे ही आतमा का राज्य एकतंत्र है।।५।।
इसके अनंत चमत्कार आर्ष में कहे।
शाश्वत अनंत सौख्य का भंडार यह रहे।।
कैवल्य के गुणों को कोई गा नहीं सके।
मां शारदा गणधर गुरू भी हारकर थके।।६।।
फिर भी हुआ वाचाल मैं गुणगान कर रहा।
पीयूष एक कण भी मिले सौख्य कर अहा।।
हे नाथ! बात एक मेरी राख लीजिये।
'कैवल्यज्ञानमती' रवि प्रभात कीजिये।।७।।

दोहा

केवलज्ञान महान् में, लोकालोक समस्त।
इक नक्षत्र समान है, नमूँ नमूँ सुखमस्तु।।८।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहालक्ष्म्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

केवलज्ञान महालक्ष्मी की, पूजा नित्य करें जो।
इस जग में धन धान्य रिद्धि निधि, लक्ष्मी वश्य करें सो।।
दीपावलि दिन लक्ष्मी हेतू, इस लक्ष्मी को ध्याके।
केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी को, वरें सर्वसुख पाके।।१।।

इत्याशीर्वादः।

महालक्ष्मी माता की स्तुति

(श्रृंगार करते समय यह स्तुति पढ़ें)

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज- अच्छा सिला........

लक्ष्मी महादेवी का श्रृंगार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।। टेक.।।
जिनवर के ये सदा संग रहती हैं।
समवसरण में आगे-आगे चलती हैं।।
उसी वैभव को नमस्कार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।। १।।
तीर्थंकर की माता को स्वप्न में दिखी थीं।
गज अभिषेक प्राप्त लक्ष्मी जी दिखी थीं।।
लक्ष्मी माता पर जल की धार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।२।।
साड़ी पहनाओ और चुनरी ओढ़ाओ।
माथे पे कुंकुम की बिन्दिया लगाओ।।
नाना अलंकारों से श्रृंगार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।३।।
लक्ष्मी को देने वाली यही महामाता हैं।
इनकी आराधना से सब मिल जाता है।।
पूजा में तन मन धन उदार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।४।।
''चन्दना'' जिसने इनका सच्चा ध्यान धर लिया।
उसी ने वरदहस्त इनका प्राप्त कर लिया।।
जिनवर सहित देवी को प्रणाम करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भण्डार भरो जी।।५।।
अरिहंत देव इनके मस्तक पे विराजे हैं।
जिनको नमन करने से दरिद्रता भागे है।
दीवाली को इनका सब सत्कार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भण्डार भरो जी।। ६।।

❖❖❖❖❖❖

महालक्ष्मी की आरती

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज- चांद मेरे आजा........

आरती लक्ष्मी देवी की-२
धन धान्य की सम्पत्ति देने वाली, माँ की करो आरतिया।।
।।आरती.।।
जिनशासन में जिनवर की, ये भक्त कही जाती हैं।
जो इनकी भक्ती करते, उनके घर में आती है।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।१।।
प्रभु समवसरण के आगे-आगे लक्ष्मी चलती हैं।
जिससे प्रभु के वैभव में, कुछ कमी न रह सकती हैं।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।२।।
धन वैभव के इच्छुक जन, इनका आराधन करते।
आर्थिक संकट नश जाता, इच्छित फल को वे लभते।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।३।।
हे लक्ष्मी माता मुझको, भक्ती का ऐसा फल दो।
लौकिक आध्यात्मिक लक्ष्मी, ''चन्दना'' मेरे मन भर दो।।
आरती लक्ष्मी देवी की।।४।।

❖❖❖❖❖❖

अथ श्रीगोमुखयक्षपूजाविधानम्

सव्येतरोर्ध्वकरदीप्रपरस्वधाक्ष, सूत्रं तथाधरकरांकफलेष्टदानम् ।।
प्राग्गोमुखं वृषमुखं वृषभं वृषांकम्, भक्तं यजे कनकभं वृषचक्रशीर्षम् ।।१।।

।।इति पूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पाजंलिं क्षिपेत् ।।

चतुर्भुजः सुवर्णाभः सुमुखो वृषवाहनः।
हस्ते च परशुं धत्ते बीजपूराक्षसूत्रकम् ।।
वरदानपरः सम्यग् धर्मचक्रं च मस्तके।
संस्थाप्यो गोमुखोयक्ष आदिदेवस्य दक्षिणे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वलक्षणसम्पूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवार जिनधर्मरक्षक सन्मार्गप्रतिपालक श्रीनाभिनंदनसेवक धनधान्यवृद्धिकारक हे श्रीगोमुखयक्षेश्वर! अत्र आगच्छ आगच्छ। इत्यादि। स्थापनम् ।।

अथ वलयः (नैवेद्य चढ़ावें)

१. ॐ गोमुखयक्षाय स्वाहा २. गोमुखपरिजनाय स्वाहा ३. गोमुखअनुचराय स्वाहा ४. गोमुखमहत्तराय स्वाहा ५. अग्नये स्वाहा ६. अनिलाय स्वाहा ७. वरुणाय स्वाहा ८. प्रजापतये स्वाहा ९. ॐ स्वाहा १०. भूःस्वाहा ११. भुवः स्वाहा १२. स्वः स्वाहा १३. ॐ भूर्भुवः स्वाहा १४. स्वधा स्वाहा।

अथाष्टकम्

तीर्थसमुद्भव वार्धिसुनीरैः, कांचनकुंभ समुद्धृतधारैः।
सं यजामि वर विघ्नविनाशं, गोमुखेश रत्नत्रयवासम् ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीगोमुखयक्षेश्वर! जलं गृहाण गृहाण।।१।। जलम्
कुंकुमचंद्रकलापविशुद्धैः, सौरभशुद्धविशुद्ध सुगंधै।।सं.२।।गंधम्
मुक्तिसुवचनामृतसुशीलैः, शालिजतंडुलपुंजविशालैः ।।सं.३।।अक्षतानि
श्रीनयनाभसुसौरभसारैः, कल्पतरूद्भवपुष्पसुवारैः।।सं.४।।पुष्पाणि
शारदशुभ्रशशांकसुदक्षैः, स्वादरसोत्कटचारुसुभक्ष्यैः ।।सं.५।।चरुम्
ध्वस्ततमःश्रयकांतिप्रतापैः, रत्नसमुद्भवदीप्रसुदीपैः।।सं.।।६।।दीपम्

कृष्णागुरुघनसारविमिश्रैः, देवदारुतरुसंभवधूपैः।।सं.।।७।।धूपम्
गंधरूपमधुरैः पृथुपिंडै, राम्रकम्रफलवृंदसुचंडैः।।सं.।।८।।फलानि
अपमृत्वादिनिवारणदक्षैः, परिधानमुत्तरीयक्षौमकैः।।सं.।।९।। सद्वस्त्रम्
गुणभूषणसुसिद्धसुप्राप्त्यैः, नवरत्नान्वितक्षेमसुभूषैः।।सं.।।१०।।आभरणम्

नीरगंधसुशालितंडुल पुष्पचारुचरुत्करैः,
दीपधूपफलार्घ्यकैः वरस्वर्णपात्रविनिर्मितैः।
भव्यजीवविशिष्टदायकनायकंस्वपरान्वितं,
पूजयामिजिनेन्द्रपंकजयुग्मसद्यदरंजितं।

ॐ आं....अर्घ्यं गृहाण गृहाण।।११।।यस्यार्थ. इत्यादि।
शांतिधारां।।पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री आदिनाथ चरणाम्बुज चंचरीकः
चक्रेश्वरी भजति यस्य सुवामभागम्
रोगाद्युपद्रवसमूहविनाशदक्षम् ।
सम्यक्त्वदर्शन शिरोमणिकं नमामि।।इत्याशीर्वादः।।

अथ श्रीगोमुखयक्ष स्तोत्रम्

श्रीनाभिनंदन जिनेश्वर शासनस्य।रक्षाकरो दुरित संहति नाश दक्षः।।
प्राग्गोमुखो वृषमुखो वृषभो वृषांकः।जीयात्सदा शुभकरो वृषभेश यक्षः।।१।।
श्रीमच्चतुर्भुज सुशोभित बीजपूरः।हस्ते स्फुरद् परशुकांत शुभाक्षसूत्रः।।
स्वर्णाभकान्ति वरदान परः स्वशीर्ष्णि।धर्मिष्ठ चक्रधर आदिजिनेन्द्रभक्तः ।।२।।
श्वासज्वरक्षयकफोग्रभगंदरार्ति।श्लैष्मातिसारकुजलोदरकासमुख्याः।।
रोगाः प्रयान्ति विलयं स्मरतां जनानाम् ।जीयात्सदा शुभकरो वृषभेश यक्षः।।३।।
मत्तेभसिंहफणिराजदवानलोग्र। युद्धाम्बुनायकमहोदरबंधनानाम् ।।
भीतिर्नवैयदभिधां स्मरतां जनानाम्।भद्रप्रदो भवतु नो वृषभेश यक्षः।।४।।
सप्रेतभूतकपिशाचकुदृष्टिशाकि–न्यद्‌गाढमुद्गलबलप्रविनाशवीरः।।
यो यक्षनाथ इह देवगणाधिनाथः।दोषौघनाशनकरो वृषभेश यक्षः।।५।।
आनंद लक्ष्मीवर वाणि सुराज्य राजी।वालभ्य भोग महिमादिनिधानदायी।।
सम्पूर्ण निर्मलयशः सुसमृद्धिवृद्धि।वृन्दं करोतु सततं वर गोमुखेशः।।६।।
सत्कीर्ति वीर सुमहोदय सत्प्रमोद।रत्नप्रकाश गुणवर्ग भृतां जनानाम् ।।

चक्रेश्वरी तव सुशोभित वामभागम् । कुर्याच्छुभं मम सदा वृषभेश यक्षः।।७।।
सद्दानदार्ढ्य सुदया सुभगत्व भाजाम् । सन्मुक्ति पूर्विमलमार्ग समुत्सुकानाम् ।।
श्रीमज्जिनेन्द्र वरधर्म परायणानाम् ।दद्यात्सुखं स सततं वृषभेश यक्षः।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीगोमुखयक्षेश्वराय स्तोत्राऽर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।।

घत्ता

इति गुणगणशीलं नीतिनिःशेषलीलम् ।
विजितरिपुसमूहं शुद्धसम्यक्त्वमूलम् ।।
जगतिजनसुवंद्यं सिद्धबुद्धैकनन्द्यम्।
भजतवृषभयक्षं केवलंशांतरूपम् ।।

अथ विसर्जनम्

शुभ्राक्षत प्रसवसत्कुलरत्नदीपैः।
माणिक्यरत्नमयकांचनभाजनस्थैः।।
श्रीगोमुखेचरणतामरसद्वयाग्रे।
सन्मंगलार्तिकमहं त्ववतारयामि।।

इति मंगलारार्तिकोद्धारणं करोमि स्वाहा।

धनदा वरदा सुरपती श्रीगोमुख सुरराज।
सेवकजन सुखियाकरे सारे वांछितकाज।।

इति श्रीगोमुखयक्षपूजा सम्पूर्णा।

श्री चक्रेश्वरी माता की पूजन

रचयित्री-ब्र.कु. सारिका जैन (संघस्थ)

स्थापना

तर्ज-दीक्षा लेकर..........

चलो सभी मिल पूजा करने, श्री चक्रेश्वरि माता की।
ऋषभदेव की शासन देवी, महिमाशाली माता की।।
इनका आराधन करने से, भक्तों के सब कष्ट भगें।
जो इनकी पूजा करते हैं, उनके दुःख दारिद्र नशें।।
आह्वानन स्थापन करके, करें अर्चना माता की-करें अर्चना माता की।
चलो सभी मिल पूजा करने, श्री चक्रेश्वरि माता की।
ऋषभदेव की शासन देवी, महिमाशाली माता की।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेवि! अत्र स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथाष्टक-

तर्ज-माई रे माई......

अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, लाए हैं हम माता।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएँगे सुख साता।।
बोलो जय जय जय , बोलो जय जय जय-२।।
गंगानदि का पावन जल, कंचन झारी में लाऊँ।
त्रयधारा दे चरणों में, निज दुःख दारिद्र नशाऊँ।।
मिले सदा सद्बुद्धि मुझे बस,......
मिले सदा सद्बुद्धि मुझे बस, यही प्रार्थना माता।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय जय जय.....।।१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै जलं समर्पयामीति स्वाहा।
स्वर्ण कटोरी में सुरभित, चन्दन घिसकर ले आऊँ।
भक्तिभाव से तेरे चरणों, में मैं उसे लगाऊँ।।
इस जग के बहुविध दुःखों से,.......
इस जग के बहुविध दुःखों से, छुटना चाहूँ माता।।

तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय जय जय.....।।२।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै चन्दनं........

जब श्री ऋषभदेव प्रभुवर ने, अक्षयपद पाया था।
तब कैलाशगिरी पर प्रभु ने, स्वातम प्रगटाया था।।
वैसे ही अक्षत पुंजों को.......
वैसे ही अक्षत पुंजों को, करूँ समर्पण माता।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय जय........।।३।।

ॐ आं क्रो ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै अक्षतं ....

तरह-तरह के फूलों के, गहनों से तुझे सजाऊँ।
तेरा सुन्दर रूप निहारूँ, कहीं न जाना चाहूँ।।
पुष्प चढ़ाकर तेरे पद में.....
पुष्प चढ़ाकर तेरे पद में, मन हर्षित हो जाता।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय......।।४।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै पुष्पं.......

लड्डू पेड़ा बरफी गुझिया, भरकर थाल चढ़ाऊँ।
तेरे सम्मुख अर्पण करके, जीवन सफल बनाऊँ।।
सुनते हैं माँ तव पूजन से.......
सुनते हैं माँ तव पूजन से, सुख वैभव मिल जाता।।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय....।।५।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै नैवेद्यं........

जगमग-जगमग दीप जलाकर, करूँ आरती तेरी।
कहीं न हो अज्ञान अंधेरा, यही भावना मेरी।।
सांसारिक दुख तव आरति से.......
सांसारिक दुख तव आरति से, चूर-चूर हो जाता।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय......।।६।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै दीपं........

जग के प्राणी तरह-तरह से, अपना रूप सँवारें।
फिर भी लाभ हुआ नहिं तो वे, आए द्वार तिहारे।।
धूप जलाई तेरे सम्मुख......
धूप जलाई तेरे सम्मुख, और नमाया माथा।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय.......।।७।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै धूपं...........

तरह-तरह के फल खाकर भी, तृष्णा शान्त न होती।
फल निष्फल हो जाते हैं, जब तृप्ती ही नहिं होती।।
अब तो मेरे मन में है बस........
अब तो मेरे मन में है बस, शिवफल की अभिलाषा।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय.....।।८।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै फलं........

जल चन्दन अक्षत पुष्पों से, मिश्रित अर्घ्य बनाऊँ।
दीप धूप अरु मधुर फलों से, सुन्दर थाल सजाऊँ।।
माँ तेरा मंगल आशिष अब.......
माँ तेरा मंगल आशिष अब, मुझको मिल जाएगा।
तेरी पूजन करके हम सब, पाएंगे सुख साता।।
बोलो जय.....।।९।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै अर्घ्यम्........

गीता छन्द- जो भव्य चक्रेश्वरी माँ के, पाद में धारा करें।
वे भूत प्रेत पिशाच आदी, बाह्य बाधा को हरें।।
संसार के सुख वैभवों को, वे तुरत ही पावते।
नीरोग रहते वे सदा ही, आत्म शान्ती पावते।।

शांतये शान्तिधारा।

जो विविध भांती के कुसुम से, करते हैं पुष्पांजली।
उनकी भरे झोली सदा, जाते नहीं खाली कभी।।
मन की सभी इच्छाएँ उनकी, शीघ्र पूरी होती हैं।
क्योंकि ये सच है माँ तो ममता, की ही मूरत होती है।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

जयमाला

तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ........

श्री चक्रेश्वरि माता की, जयमाल सजाकर लाए हैं।
तेरी सुन्दर छवि को लखकर, रवि शशि भी शरमाए हैं।।
जय चक्रेश्वरी बोलो जय चक्रेश्वरी-२।।
तुम प्रभु ऋषभ की शासनदेवी, गोमुख यक्ष की यक्षी हो।
भक्तों की हर पीड़ा को तुम, क्षणभर में हर लेती हो।।
चक्रधारिणी जगत्पूज्य हो, तेरे गुण को गाए हैं।
तेरी सुन्दर छवि को लखकर, रवि शशि भी शरमाए हैं।।
जय चक्रेश्वरी-४।।१।।
माता तेरा मुखमण्डल, सोने की तरह चमकता है।
नयनों में करुणा एवं वात्सल्य का संगम दिखता है।।
बाधाहरणी मंगलकरणी , शरण तुम्हारी आए हैं।
तेरी सुन्दर छवि को लखकर, रवि शशि भी शरमाए हैं।।
जय चक्रेश्वरी-४।।२।।
तेरे इक सौ आठ नाम, मंत्रों को जो भी पढ़ते हैं।
सुख सम्पति सौभाग्य प्राप्त कर, परमशान्ति को लभते हैं।।
शीलवती त्रैलोक्यपूज्य हो, तव वन्दन को आए हैं।
तेरी सुन्दर छवि को लखकर, रवि शशि भी शरमाए हैं।।
जय चक्रेश्वरी-४।।३।।
तेरी महिमा अगम-अकथ है, कैसे हम गाएँ माता।
दो ऐसा आशीष हमें जो, टूटे ना तुमसे नाता।।
तेरा सन्निध पाकर ही हम, निज मन कमल खिलाए हैं।
तेरी सुन्दर छवि को लखकर, रवि शशि भी शरमाए हैं।।
जय चक्रेश्वरी-४।।४।।
हे चक्रेश्वरि माता! जग पर, ऐसा चक्र चला दीजे।
इस जग के सब प्राणी को अब, सच्चा मार्ग सिखा दीजे।।
यही ''सारिका'' आस लगाकर, हम तव चरण में आए हैं।
तेरी सुन्दर छवि को लखकर, रवि शशि भी शरमाए हैं।।
जय चक्रेश्वरी-४ ।।५।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी महादेव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री चक्रेश्वरि मात को, वन्दन शत-शत बार।
ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त हों, भरे सौख्य भण्डार।।

।।इत्याशीर्वादः।।

अथ श्रीचक्रेश्वरी देवीमन्त्रस्तोत्रम्

।। ॐ नमो धर्मचक्राधिपतये सौभाग्यमस्तु संसारचक्रशान्तिरस्तु।।

श्री चक्रे! चक्रभीमे! ललितवरभुजे! लीलया दोलयन्ती।
चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलितशतमखे खेखगेन्द्राधिरूढ़े!।।
तत्त्वैरुद्भूतभावे सकलगुणनिधे! त्वं महामन्त्रमूर्त्ते!
कोट्यादित्यप्रकाशे त्रिभुवनमहिते! त्राहि मां देवि! चक्रे! ।।१।।
क्लीं क्लीं क्लींकारचित्ते! किलकिलवदने! दुंदुभिभीमनादे!।
ह्रां ह्रीं ह्रः शंख बीजे! खगपतिगमने! रोहिणि शोषिणि त्वम् !।।
क्षां आं ॐ भासयन्ती त्रिभुवनमपि तच्चक्रचक्रान्तकीर्ते।।
क्षां क्षीं क्षूं विस्फुरन्ती प्रबलबलयुते! त्राहि मां देवि! चक्रे।।२।।
श्रां श्रीं श्रूं श्रः प्रसिद्धे! स्वजनजनपदप्रीतिसन्तोषलक्ष्मीः।
श्रीवृद्धे! कीर्तिबुद्धी प्रथयसिवरदे! त्वं महामंत्रमूर्ते!।।
त्रैलोक्यं क्षोभयंती ह्यसुरभिदुरहुंकारभीमैकनादे!।
क्लीं क्लीं क्लीं द्रावयन्ती धृतकनकनिभे! त्राहि मां देवि! चक्रे।।३।।
ॐ क्षूं ह्रां ह्रीं सबीजैः प्रवरगणधरैर्मोहिनि शोषिणि त्वम् !।
शैले शैले नटन्ति विजयजयकरी रौद्रमूर्ते! त्रिनेत्रे!।।
आं ईं ॐ भासयन्ती त्रिभुवनमखिलं तत्त्वतेजः प्रकाशे!।
रूं रूं रों हः कराले! भगवति! वरदे! त्राहि मां देवि! चक्रे।।४।।
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं सुहर्षे! हहहहहसिते! चक्रसंकाशबीजे!।
ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षस्सुवर्णे! कुवलयनयनैर्विद्रवं द्रावयन्ती!।।
ह्रीं ह्रें ह्रः क्षस्त्रिलोकीममृतजलधरैर्वारुणैः प्लावयन्ती!।
झ्रां झ्रीं ह्रूं सः सुबीजैः प्रबलबलभयात् त्राहि मां देवि! चक्रे।।५।।
आं क्रों ह्रीं संयुतांगे प्रलयदिनकरे! तस्यकोटि प्रकाशे!।
अष्टौचक्राणि धृत्वा विमलवरभुजे! पद्ममेकं फलं च!।।
सच्चक्रे कुंकुमांगे! विधृतवतिरुहे! तीक्ष्णरौद्रे! प्रचण्डे!।
ह्रां ह्रीं हूंकारकारी रररररमणि! त्राहि मां देवि! चक्रे!।।६।।
श्रां श्रीं श्रूं श्रः सुवन्तेस्त्रिभुवनमहिते! नादविन्दूग्रनेत्रे!।

वं वं वं वज्रहस्ते! लललललललिते! नीलकेशालिकेशे!।।
चं चं चं चक्रहस्ते! चलचलचलिते! नूपुरैर्लोललीले!।
त्वं लक्ष्मी: श्री: सुकीर्ति: सुरवरनमिते! त्राहि मां देवि! चक्रे।।७।।
ॐ ह्रीं फट्कारमंत्रैर्हृदयमुपगते ऋद्धिवश्याधिकारे!।
ह्रां ह्रीं क्लां क्लीं प्रघोषै: प्रलयघनघटाटोपशंखप्रणादे!।।
वां फां ह्रीं क्रोधमूर्ते! धगधगितशिखे! ज्वालिनि! ज्वालमाले!।
आं द्रां द्रीं आप्रघोषे प्रकटितदशने त्राहि मां देवि! चक्रे!।।८।।
य: स्तोत्रं मंत्ररूपं पठति जनमनोभक्तिपूर्वं त्रिसन्ध्यम् ।
त्रैलोक्यं तस्य वश्यं भवति बुधजनो वाक्यतत्त्वैश्चदिव्यै:।।
सौभाग्यं स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरवं त्वत्प्रसादात् ।
डाकिन्यो गुह्यकाश्च विदधति न भयं चक्रदेव्या: स्तवेन।।९।।

इत्यार्षे यज्ञकल्पे श्रीचक्रेश्वरीदेवीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

अथ जयमाला

यक्षिण्यादिजिनेश्वरस्यमहिता चक्रेश्वरी सर्वदा।
ह्रीं बीजं प्रणवेन फट् परियुतं ह्यादित्यहस्तान्वितम् ।।
भक्तेभ्य: प्रददाति ऋद्धिमतुलां वश्याश्च सर्वेजना:।
हे! मातर्मम दु:खनाशनपरे तुभ्यं नम: सर्वदा।।१ ।।
आदीश्वरवरसेवित चरणा, चक्रेश्वरी जनभवभयहरणा।
गोमुखरक्षणदक्षिणसहिता, भवजलतारणआमयरहिता।।२।।
वामभागविष्टपगणरक्षा? दैत्यदनुजभयनाशनदक्षा।
पद्मासीना खगपतिवाही, गमनधुरंधर जगत्त्रयमोही।।३।।
द्वादश भुजपरिशोभिविराजं, तेषामायुध विविधसुप्राज्यं।
दक्षिणदिशिभुजषट्कसुयुक्ते, चक्रवज्रवरदे शुभशक्ते।।४।।
वामेदिशिऋतुभुजविख्याता, चक्रवज्रफल जनमनत्राता।
सर्वायुधगणगहनगरिष्ठं, दुर्जनजनबलनाशनदुष्टं।।५।।
कामीजनमनफलदमभीष्टं, पूजित चक्रेश्वरी देवीष्टं।
षोडशभरणालंकृतगात्रां, कमलाकरवरशोभितनेत्रां।।६।।
चन्द्राननमुखसंभृततेजं, पीताम्बर सुदयारसभाजं।

अप्रतिचक्रा चरण पवित्रं, अष्टविधार्चनहेमसुपात्रं।।७।।
भावसहितपूजितनरनारी, तेषांधनकनसंपत्तिसारी।
कनकवर्णतनुकान्तिसुयुक्तं, सुरनरकिन्नरगुणानुरक्तं।।८।।
तवनामद्वयमेतत्मुख्यं, चक्रेश्वर्यप्रतिचक्राख्यं।
युगसहस्र सामानिकदेवा, बावनवीर सुसाधित सेवा।।९।।
वादविवाद बौद्धसंग जाता, अकलंकदेवं त्वं जयदाता।
मानतुंगमुनि बंधनमोचनि, भक्ति परायणसम्यक्लोचनि।।१०।।
जिनधर्माभ्युत्थानसुकुशलां, मिथ्यामोहनिवारणनिपुणाम् ।
रत्नत्रयनिधि जगविख्याता, सेवकजनमन शिवसुखदाता।।११।।

घत्ता

विविधदुरितवारी दुष्टदारिद्र्यहारी, कलिमलपरिहारी सज्जनानंदकारी।
असुरमदनिवारी गोमुखप्रीतिकारी, जिनमुनिपदसेवी पातु मां चक्रदेवी।।
ॐ आं कों ह्रीं मंत्ररूपायै विश्वविघ्नहरणायै सकलजनहितकारिकायै
श्रीचक्रेश्वरीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।।

अथाशीर्वाद:- त्वां कामितार्थ फलदां सुरधेनरूपां।
चिंतामणिं मनसिचिंतितदानरूपां।।
सच्चित्तवांछित मनोरथ कल्पवल्ली।
सद्रत्रधान्य वसुदा सुतदा कृपाली।।१।। इत्याशीर्वाद:

अथविसर्जनम्- क्षीराब्धिफेनधवलेन सुतण्डुलेन।
दीपेन धूपतमसा कुसुमोच्चयेन।।
श्रीनाभिनंदन पदाब्जयुगस्थभृंगे।
नीराजनं तव सुदत्यवतारयामि।।१।।

।।इति मंगलारार्तिकोद्धारणं करोमि स्वाहा।।

मत्प्रार्थनां शृणु कृपां कुरु चक्रदेवी, विघ्नौघपापपरिदुष्टमिदं च देहं।
आह्वानकं तव मयाकृतमात्मशांत्यै, पुण्येन विघ्ननिवहा त्वरितं प्रयान्तु।।१।।
त्वद्दयया चक्रेश्वरि प्राप्तं धनसुतदारसौभाग्यम् ।
धन्यस्त्वत्कृपयाऽहं धन्योजातोस्मिलोकेस्मिन् ।।२।।

मातर्ममसर्वेष्टान् परिपूरय चात्र संस्थितेकृपया।
मम सर्वानपराधान् क्षमस्व जगदम्ब मां रक्ष।।३।।

सूचना-विशेष पूजा के लिए श्री पद्मावती देवी की पूजा के अष्टक के बाद में पाद्य, आचमन, छत्र, पताका, दर्पण, षोडशाभरणार्चन आदि के श्लोकों को नीचे लिखे अनुसार नाम बदलकर पढ़कर समर्पण करें तथा अन्यान्य देवियों की पूजा में भी ऐसे ही प्रयोग करें।

उदाहरणार्थ- सुगन्धिनीरैस्त्वत्पादौ प्रक्षाल्यपरिपूजये।
चक्रेश्वरीं जगत्पूज्यां विश्वविघ्नोपशान्तये।।

श्रीज्वालिनीं जगत्०। कूष्माण्डिनीं जगत्०इत्यादि। शेषपूर्ववत्।

अथ श्री चक्रेश्वरीदेवी अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्।

नमः श्री नाभिनन्दाय मोक्षलक्ष्मीनिवासिने।
गोमुखाऽप्रतिचक्राय भुक्तिमुक्तिप्रदायिने।।१।।
जय जय जिनयक्षि सर्व लोकैक रक्षि।
जय जय जगदम्बे शुद्ध पूर्णेन्दु बिम्बे।।
हर हर मम पापं देहि बुद्धि प्रदीपं।
भव भय हरणं मे पाहि मां देवि चक्रे।।२।।
चक्रेश्वरी चक्रायुधा चक्रिणी चक्रधारिणी।
चक्रपराक्रमादेवी चन्द्रकान्ता च चन्द्रिका।।३।।
चतुराश्रमवासिनी चन्द्रानना चतुर्मुखा।
चैत्यमंगला च -भक्ता त्रिनेत्रा त्वं च त्र्यम्बिका।।४।।
तपस्विनी तपोनिष्ठा त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी।
धर्मपाला धर्मरूपा वसुन्धरा शक्रपूजिता।।५।।
गंभीरा वासवा त्वं च लोकेश्वरी लोकार्चिता।
पवित्रा पावना भक्तवत्सला भव्यरक्षिणी।।६।।
महीधरा पात्रदात्री मंगला मांगल्यप्रदा।
जगन्माया जगत्पाला सोमाभा महीशार्चिता।।७।।

वज्रांगा गोमुखांगा च हेमाभा गोमुखप्रिया।
वज्रायुधा वज्ररूपा कामिनी कामरूपिणी।।८।।
शीलवती शीलभूषा शीलदा कामितप्रदा।
शरणरक्षी शरण्या सुज्ञाना च सरस्वती।।९।।
वरदात्री जिनभक्ता जिनयक्षी प्रशंकरी।
त्रिलोकपूज्या शुद्धा च, सुप्रसिद्धा सुशर्मदा।।१०।।
त्रिलोकरक्षिणी-ज्ञाना भीतिहत्री सुसौरभा।
भीमा च भारती माता भुजंगी भूतरक्षिणी।।११।।
मंगलमूर्ति मंगला भद्रा त्रिलोकवन्दिता।
लीलावती ललामाभा भद्ररूपा च भद्रदा।।१२।।
ॐकारौंकारभक्ता च ह्रलका क्षेमदायिनी।
अलंघ्या चेतनादेवी सुगन्धा गन्धशालिनी।।१३।।
नृसुरार्चिता करुणा पद्मप्रभाऽर्थदायिनी।
रोगनाशा शिष्टपाला क्षेमभूषा क्षेमंकरा।।१४।।
इष्टदाऽनिष्टहर्त्री च जगन्माता जगन्नुता।
श्रीकान्ता चापि श्री देवी कल्याणी मंगलाकृतिः।।१५।।
त्रिज्ञानधारिणी देवी पद्माक्षी सर्वरक्षिणी।
लोकपाला लोकमाता नमः सर्वसुवन्दिता।।१६।।
ॐ ह्रीं फट्कार मंत्रैश्च ऋद्धिवश्याधिकारिणी।
त्राहि त्राहि पुनस्त्राहि भोस्त्राहिमां चक्रेश्वरि।।१७।।
नामाष्टशतकं स्तोत्रं सर्वविघ्नविनाशकम्।
त्रिसन्ध्यं पठते नित्यं कल्याणं विजयो भवेत्।।१८।।

इति श्रीचक्रेश्वरी देवी अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ श्रीचक्रेश्वरीदेवी अष्टोत्तरशतनाम बीजाक्षर मन्त्राः

अष्टोत्तरशतं शुभ्रैः पुष्पैर्वामणिभिस्तथा।
यक्षेश्वरी-पदाम्भोजे जपं कृत्वा नमाम्यऽहम्।।

१. ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रेश्वर्यै नमः २. ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रायुधायै नमः ३. ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रिण्यै नमः ४. ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रधारिण्यै नमः ५. ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रपराक्रमायै नमः ६.ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रकान्तायै नमः ७. ॐ

आं क्रों ह्रीं चन्द्रिकायै नमः ८. ॐ आं क्रों ह्रीं चतुराश्रमवासिन्यै नमः ९. ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्राननायै नमः १०. ॐ आं क्रों ह्रीं चतुर्मुखायै नमः ११. ॐ आं क्रों ह्रीं चैत्यमंगलायै नमः १२. ॐ आं क्रों ह्रीं चैत्यभक्तायै नमः १३. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिनेत्रायै नमः १४. ॐ आं क्रों ह्रीं त्र्यम्बकायै नमः १५. ॐ आं क्रों ह्रीं तपस्विन्यै नमः १६. ॐ आं क्रों ह्रीं तपोनिष्ठायै नमः १७. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपुरायै नमः १८. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः १९. ॐ आं क्रों ह्रीं धर्मपालायै नमः २०. ॐ आं क्रों ह्रीं धर्मरूपायै नमः २१. ॐ आं क्रों ह्रीं वसुन्धरायै नमः २२. ॐ आं क्रों ह्रीं शक्रपूजितायै नमः २३. ॐ आं क्रों ह्रीं गम्भीरायै नमः २४. ॐ आं क्रों ह्रीं वासवायै नमः २५. ॐ आं क्रों ह्रीं लोकेश्वर्यै नमः २६. ॐ आं क्रों ह्रीं लोकार्चितायै नमः २७. ॐ आं क्रों ह्रीं पवित्रायै नमः २८. ॐ आं क्रों ह्रीं पावनायै नमः २९. ॐ आं क्रों ह्रीं भक्तवत्सलायै नमः ३०. ॐ आं क्रों ह्रीं भव्यरक्षिण्यै नमः ३१. ॐ आं क्रों ह्रीं महीधरायै नमः ३२. ॐ आं क्रों ह्रीं पात्रदात्र्यै नमः ३३. ॐ आं क्रों ह्रीं मंगलायै नमः ३४. ॐ आं क्रों ह्रीं मांगल्यप्रदायै नमः ३५. ॐ आं क्रों ह्रीं जगन्मायायै नमः ३६. ॐ आं क्रों ह्रीं जगत्पालायै नमः ३७. ॐ आं क्रों ह्रीं सोमाभायै नमः ३८. ॐ आं क्रों ह्रीं महीशार्चितायै नमः ३९. ॐ आं क्रों ह्रीं वज्रांगायै नमः ४०. ॐ आं क्रों ह्रीं गोमुखांगायै नमः ४१. ॐ आं क्रों ह्रीं हेमाभायै नमः ४२. ॐ आं क्रों ह्रीं गोमुखप्रियायै नमः ४३. ॐ आं क्रों ह्रीं वज्रायुधायै नमः ४४. ॐ आं क्रों ह्रीं वज्ररूपायै नमः ४५.ॐ आं क्रों ह्रीं कामिन्यै नमः ४६. ॐ आं क्रों ह्रीं कामरूपिण्यै नमः ४७. ॐ आं क्रों ह्रीं शीलवत्यै नमः ४८. ॐ आं क्रों ह्रीं शीलभूषायै नमः ४९. ॐ आं क्रों ह्रीं शीलदायै नमः ५०. ॐ आं क्रों ह्रीं कामितप्रदायै नमः ५१. ॐ आं क्रों ह्रीं शरणरक्ष्यै नमः ५२. ॐ आं क्रों ह्रीं शरण्यायै नमः ५३. ॐ आं क्रों ह्रीं सुज्ञानायै नमः ५४. ॐ आं क्रों ह्रीं सरस्वत्यै नमः ५५. ॐ आं क्रों ह्रीं वरदात्र्यै नमः ५६. ॐ आं क्रों ह्रीं जिनभक्तायै नमः ५७. ॐ आं क्रों ह्रीं जिनयक्ष्यै नमः ५८. ॐ आं क्रों ह्रीं प्रशंकर्यै नमः ५९. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिलोकपूज्यायै नमः ६०. ॐ आं क्रों ह्रीं शुद्धायै नमः ६१. ॐ आं क्रों ह्रीं सुप्रसिद्धायै नमः ६२. ॐ आं क्रों ह्रीं सुशर्मदायै नमः ६३. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिलोकरक्षिण्यै नमः ६४. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिकालज्ञानायै नमः ६५. ॐ आं क्रों ह्रीं भीतिहर्त्र्यै नमः ६६. ॐ आं क्रों ह्रीं सुसौरभायै नमः ६७. ॐ आं क्रों ह्रीं भीमायै नमः६८. ॐ आं क्रों ह्रीं भारत्यै नमः ६९. ॐ आं क्रों ह्रीं भुजंग्यै नमः ७०. ॐ आं क्रों ह्रीं

भूतरक्षिण्यै नमः ७१. ॐ आं क्रों ह्रीं मंगलमूर्त्यै नमः ७२. ॐ आं क्रों ह्रीं मंगलायै नमः ७३. ॐ आं क्रों ह्रीं भद्रायै नमः ७४. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिलोकवन्दितायै नमः ७५. ॐ आं क्रों ह्रीं लीलावत्यै नमः ७६. ॐ आं क्रों ह्रीं ललामाभायै नमः७७. ॐ आं क्रों ह्रीं भद्ररूपायै नमः ७८. ॐ आं क्रों ह्रीं भद्रदायै नमः ७९. ॐ आं क्रों ह्रीं ऊँकारायै नमः ८०. ॐ आं क्रों ह्रीं ऊँकारभक्तायै नमः ८१. ॐ आं क्रों ह्रीं अलकायै नमः ८२. ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेमदायिन्यै नमः ८३. ॐ आं क्रों ह्रीं अलंघ्यायै नमः ८४. ॐ आं क्रों ह्रीं चेतनायै नमः ८५. ॐ आं क्रों ह्रीं सुगन्धायै नमः ८६. ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धशालिन्यै नमः ८७. ॐ आं क्रों ह्रीं नृसुरार्चितायै नमः ८८. ॐ आं क्रों ह्रीं करुणायै नमः ८९. ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मप्रभायै नमः ९०. ॐ आं क्रों ह्रीं अर्थदायिन्यै नमः ९१. ॐ आं क्रों ह्रीं रोगनाशायै नमः ९२. ॐ आं क्रों ह्रीं शिष्टपालायै नमः ९३. ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेमभूषायै नमः ९४. ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेमंकरायै नमः ९५. ॐ आं क्रों ह्रीं इष्टदायै नमः ९६. ॐ आं क्रों ह्रीं अनिष्टहर्त्र्यै नमः ९७. ॐ आं क्रों ह्रीं जगन्मात्रे नमः ९८. ॐ आं क्रों ह्रीं जगन्नुतायै नमः ९९. ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीकान्तायै नमः १००. ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीदेव्यै नमः १०१. ॐ आं क्रों ह्रीं कल्याण्यै नमः१०२. ॐ आं क्रों ह्रीं मंगलाकृत्यै नमः १०३. ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिज्ञानधारिण्यै नमः १०४. ॐ आं क्रों ह्रीं पद्माक्ष्यै नमः १०५. ॐ आं क्रों ह्रीं सर्वरक्षिण्यै नमः १०६. ॐ आं क्रों ह्रीं लोकपालायै नमः १०७.ॐ आं क्रों ह्रीं लोकमात्रे नमः १०८. ॐ आं क्रों ह्रीं सर्वसुवन्दितायै नमः।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीचक्रेश्वर्यादि-सर्वसुवन्दितान्ताष्टोत्तरशतनामधारिण्यै श्री चक्रेश्वरीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।।

।।इति श्रीचक्रेश्वरीदेवी अष्टोत्तरशतनामबीजाक्षरमन्त्राःसम्पूर्णाः।।

अर्हत्पादपयोजभक्तकुशले श्रीगोमुखेशप्रिये।
भक्तानांशरणार्थिनामभयदे सत्पुत्रसंदायिनि।।
चक्राद्यान्वितहस्तभूषितमहा संकाशसत्पूरिते।
वन्देऽहं तव पादपद्मयुगलं चक्रेविचन्द्राम्बिके।।
मंगलं चक्रिणीदेवी मंगलं चक्रधारिणी।
मंगलं स्वर्णवर्णाभा मंगलं गोमुखप्रिया।।

❖❖❖❖❖❖

चक्रेश्वरी माता की आरती

रचयित्री-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

श्री चक्रेश्वरी माता की हम, करें आरती आज।
तेरी पूजन करने से माँ, बनते सारे काज।।
हो मैया हम सब उतारें तेरी आरती-२।।
तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तुम हो शासन देवी।
भक्तों की सब पीड़ा को तुम, क्षण भर में हर लेतीं।।
मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।१।।
गोमुख यक्ष की यक्षी तेरी, कंचन जैसी काया।
जो भी तेरे दर पर आता, उसका कष्ट मिटाया।।
मैया हम सब उतारें तेरी आती।।२।।
भक्ति भाव से जो भी तेरे, गुण समूह को गाते।
सुत अर्थी सुत को पा जाते, धन अर्थी धन पाते।।
मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।३।।
हे चक्रेश्वरि माता सबको, सच्चा मार्ग सिखा दो।
इस जग के सब प्राणी को अब, बाधा रहित बना दो।।
मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।४।।
तेरा नाम जपें जब माता, भूत प्रेत सब भागें।
करे ''सारिका'' वन्दन जो भी, उसकी किस्मत जागे।।
मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।५।।

❖❖❖❖❖❖

पद्मावती अभिषेक

मंगलाचरण

(शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता, विद्यादिका देवताः।
श्री तीर्थंकरमातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा, दिक्कन्यकाश्चाष्टधा।
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः, कुर्वन्तु नो मंगलं।।१।।

जलाभिषेक-

ॐ ह्रीं पवित्रतरजलेन पद्मावती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।

शर्कराभिषेक-

ॐ ह्रीं शर्करया पद्मावती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।

घृताभिषेक-

ॐ ह्रीं घृतेन पद्मावती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।

दुग्धाभिषेक-

ॐ ह्रीं दुग्धेन पद्मावती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।

दधि अभिषेक-

ॐ ह्रीं दध्ना पद्मावती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।

चतुष्कोण कलश जलाभिषेक-

ॐ ह्रीं चतुष्कोण कलशेन पद्मावती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।

सुगन्धित जलाभिषेक-

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः सुगन्धित जलेन पद्मावती देवीं अभिषेचयामि स्वाहा।

❖❖❖❖❖❖

श्री पद्मावती स्तोत्र (भाषा)

(श्रृंगार करते समय यह स्तोत्र पढ़ें)

जिन शासनी हँसासनी पद्मावती माता।
भुज चार से फल चार दे, पद्मावती माता।। टेक.।।
जब पार्श्वनाथ जी ने शुक्ल ध्यान आरम्भा।
कमठेश ने उपसर्ग तब, किया था अचम्भा।।
निज नाथ सहित, आपके सहाय किया है।
जिन नाथ को निज माथ पै चढ़ाय लिया है।। जिनशासनी.।।१।।
फनतीन सुमन लीन तेरे शीश विराजै।
जिन राज तहाँ ध्यान धरै आप विराजै।।
फनि इन्द्र ने फन की करी जिनेन्द्र पे छाया।
उपसर्ग वर्ग मेट के आनन्द बढ़ाया।। जिनशासनी.।।२।।
जिन पार्श्व को हुआ, तभी केवल सुज्ञान है।
समवसरण की बनी रचना महान है।।
प्रभु ने किया धर्मार्थ काम मोक्ष दान है।
तब इन्द्र ने आके किया पूजा विधान है। जिनशासनी.।।३।।
जब से किया तुम पार्श्व के, उपसर्ग का विनाश।
तब से हुआ जश आपका त्रैलोक में प्रकाश।।
इन्द्रादि ने भी आपके गुण में किया हुलास।
किस वास्ते कि इन्द्र खास पार्श्व का है दास।। जिनशासनी.।।४।।
धर्मानुराग रंग में उमंग भरी हो।
सन्ध्या समान लाल रंग अंग धरी हो।
जिन सन्त शील वन्त पै, तुरंत खड़ी हो।
मनभावनी दरशावनी, आनन्द बड़ी हो।। जिनशासनी.।।५।।
जिन धर्म की प्रभावना का भाव किया है।
तिन साथ ने भी आपको सहाय लिया है।।

तब आपने इस बात को बनाय लिया है।
जिन धर्म के निशान को फहराय दिया है।। जिनशासनी.।।६।।
था बोध ने तारा का किया कुम्भ में थापन।
अकलंक जी से करते रहे बाद वेहापन।।
तब आपने सहाय किया धाय मात बन।
तारा का हरा मान हुआ बोध उत्थापन।। जिनशासनी.।।७।।
इत्यादि जहां धर्म का विवाद पड़ा है।
तब आपने पर वादियों का मान हरा है।।
तुमसे ही स्याद्वाद का निशान खरा है।
इस वास्ते हम आपसे अनुराग धरा है।। जिनशासनी.।।८।।
तुम शब्द ब्रह्म रूप मंत्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणी समान कामना की भरैया।।
जग जाप जोग जैन की सब सिद्ध करैया।
परवाद के पुरयोग की तत्काल हरैया।। जिनशासनी.।।९।।
लखि पार्श्व तेरे पास शत्रु त्रासते भाजें।
अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्प को त्याजैं।।
दुख रूप खर्व गर्व को वह वज्र हरै है।
कर कंज में इक कंज सो सुख पुंज भरे है।। जिनशासनी.।।१०।।
चरणारविन्द में है नूपुरादि आभरन।
कटि में है सार मेखला प्रमोद की करन।।
उर में है सुमन माल सुमन भान की माला।।
षट् रंग अंग संग संग सो है विशाला।। जिनशासनी.।।११।।
(बिछुआ, पायल, हार आदि)
कर कुंज चारु भूषण सों भूरि भरा है।
भवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरि करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सौ जोति धरा है।
सिर शीश फूल फूल सो अतुल्य भरा है।। जिनशासनी.।।१२।।

(कान की झुमकी, मुकुट, शीशफूल आदि)

मुख चन्द्र को अमंद देख चन्द्र भी थमा।
छवि हेर हार हो रहा रम्भा को अचम्भा।
दृग तीन सहित लाल तिलक भाल धरे है।
विकसित मुखारविंद सो आनंद झरे हैं।। जिनशा.।।१३।।

(कंगन, कर्णाभूषण, बिंदी)

जो आपको त्रिकाल लाल चाह सो ध्यावे।
विकराल भूमि पाल उसे भाल झुकावै।।
जो प्रीति सो प्रतीत और प्रीति बढ़ावै।
सो रिद्धि सिद्धि वृद्धि नवो निद्धि को पावै।। जिनशा.।।१४।।
जो दीप दान के विधान से तुम्हें जपै।
तो पाय के निधान तेज पुंज से दिपै।।
जो भेद मंत्र वेद में निवेद किया है।
सो वाध के उपाधि सिद्ध साध लिया है।। जिनशा.।।१५।।
धन धान्य का अर्थी है सो धन धान्य को पावै।
सन्तान का अर्थी है सो सन्तान खिलावै।।
निज राज का अर्थी है सो फिर राज लहावै।
पद भ्रष्ठ सुपद पाय के मन मोद बढ़ावै।। जिनशा.।।१६।।
ग्रह क्रूर व्यन्तराल व्याल जाल पूतना।
तुम नाम के सुनत ही सो भागे भूतना।।
कफ वात पित्त रक्त रोग शोक शाकिनी।
तुम नाम से डरी मही परात डाकिनी।।जिनशा.।।१७।।
भयभीत की हरनी है, तुही मात भवानी।
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी।।
तुम संकटा समस्त कष्ट काटनी दानी।
सुख सार की करनी तु शंकरीश महारानी।। जिनशा.।।१८।।

इस वक्त में जिन भक्त को दुख व्यक्त सतावै।
हे मात तुझे देख के क्या दर्द ना आवे।।
सब दिन से तो करती रही जिन भक्त पै छाया।।
किस वास्ते उस बात को ए मात भुलाया।। जिनशा.।।१९।।
हो मात मेरे सर्व ही अपराध क्षमा कर।
होता नहीं क्या बाल से कुचाल यहाँ पर।।
कुपुत्र तो होते हैं जगत माहि सरासर।
माता न तजै तिन सौ कभी नेह जन्म भर।। जिनशा.।।२०।।
अब मात मेरी बात को सब भांति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो विघ्न विदारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करकंज की छाया करो दुख दर्द निवारो।। जिनशा.।।२१।।
ब्रह्मण्डनी सुख मण्डनी खल खण्डनी ख्याता।
दुख टारि के परिवार सहित दे मुझे साता।।
तज के विलम्ब अम्बाजी अवलम्ब दीजिए।
वृष चन्द नन्दवन्द को आनन्द दीजिए।।जिनशा.।।२२।।
जिन धर्म से डिगने का कहीं आ पड़े कारन।
तो लीजिए उबार मुझे भक्त उदारन।।
निज कर्म के संयोग से जिस जौन में जावौ।
तहाँ दीजिए सम्यक्त्व जो शिव धाम को पावौ।।
जिन शासनी हंसासनी पद्मावती माता।
भुज चारतें फल चार दे पद्मावती माता।। जिनशा.।।२३।।

❖❖❖❖❖❖

श्री पद्मावती पूजा

जगजीवन को शरण, हरण भ्रम तिमिर दिवाकर।
गुण अनन्त भगवन्त कंथ, शिवरमणि सुखाकर।।
किशनबदन लजिमदन, कोटिशशिसदन विराजै।
उरगलच्छन पगधरण, कमठ मद खण्डन साजैं।।
अनन्त चतुष्टय लक्षिकर, भूषित पारस देव।
त्रिविध नमौं शिरनायके, करूँ पद्मावती सेव।।१।।

दोहा

आह्वानन बहुविधि करों, इस थल तिष्ठो आय।
सत्य मात पद्मावती, दर्शन दीजो धाय।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावती महादेवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावती महादेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावती महादेवि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

त्रिभंगी छंद

गंगा ह्रदनीरं सुरभिसमीरं आक्रतक्षीरं ले आयो।
रतनन की झारी भरि करधारी आनंदकारी चितचायो।।
पद्मावति माता जगविख्याता, दे मोहि साता मोदभरी।
मैं तुम गुणगाऊँ हर्ष बढ़ाऊँ, बलिबलि जाऊँ धन्यघरी।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै जलं०।

गोशीर घिसायो केशर लायो, गंध बनायो स्वच्छमई।
आतापविनाशे चितहुल्लासे, सुरभि प्रकाशे शीतमई।।पद्मा.।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै चंदनं०।

मुक्ता उनहारं अक्षतसारं, खण्ड निवारं गन्धभरे।
शशिज्योतिसमानं मिष्ट महानं, शक्तिप्रमानं पुंजधरे।।पद्मा.।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै अक्षतं...।

चम्पारु चमेली केतकि सेली, गंध जु फैली चहुँ ओरी।
चितभ्रमरलुभायो मन हरषायो, तुमढिंग आयो सुन मोरी।। पद्मा.।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै पुष्पं....।

घेवर घृतसाजे खुरमाखाजे, लाडू ताजे थार भरे।
नैनन सुखदाई तुरत बनाई, कीरत गायी अग्रधरे।।पद्मा.।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै नैवेद्यं...।

दीपकशशिजोतं तमक्षयहोतं, ज्ञान उद्योतं छाय रह्यो।
ममकुमतविनाशीसुमतप्रकाशी, समताभाषी सरनलह्यो।।पद्मा.।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै दीपं....।

कृष्णागरुधूपं सुरभिअनूपं, मन वच रूपं खेवत हो।
दशदिश अलि छाये वाद्य बजाये, तुम चरणाग्रे सेवतुहो।।पद्मा.।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै धूपं...।

बादाम सुपारी श्रीफल भारी, आनन्दकारी भरिथारी।
तुम चरण चढ़ाऊँ चित उमगाऊँ, वांछित पाऊँ बलिहारी।। पद्मा.।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै फलं...।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू चित, दीप धूप फल लाय धरे।
शुभ अर्घ बनायो पूजन धायो, तूर बचाओ नृत्य करे।। पद्मा.।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै अर्घ्यं....।

अथ जयमाला

श्री पद्मावति माय, गुण अनेक तन शोभते।
अब वर्णन जयमाल के, सुनौं सुजन मन लाय के।।१।।

पध्दड़ी छन्द

जय तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ, प्रणमूँ चिरकाल नवाय माथ।
जिनमुख तैं बानी खिरी सार, सब जीवन को आनन्दकार।।
छद्मस्थ अवस्था को जु वर्ण, सुनियो भवि चित्तलगाय कर्ण।
इक दिन हय चढ़ि कर पार्श्वनाथ, अरु सखा अनेकों लिए साथ।।

गंगा तट आये मोद ठान, तहाँ तापस कुतप करै अयान।
इक काष्ठथूल में नाग दोय, तपसी को कुछ नहिं ज्ञान सोय।।
वह काष्ठ अग्नि में दियो लगाय, उरगनि को संकट परौ आय।
यह भेद जान श्री पार्श्वदेव, तापस के ढिग आये स्वमेव।।
तासों बोले नहिं ज्ञान तोय, हिंसामय तप करि कुगति होय।
चीरौ जु काष्ठ तत्काल सोय, काढ़े सु नागिनी नाग दोय।।
तिनके जु कंठगत रहे प्राण, पारस प्रभु करुणा धर महान।।
जिनके वचनामृत हैं महान, निर्मल भावों से सुने कान।।
तत्काल पुण्यसमुदाय होय, उत्तम गति बन्ध कियो सु दोय।
संन्यास कियो मन को लगाय, धरणेन्द्र पद्मावती लहाय।।
सो ही पद्मावति मात सार, नित प्रति पूजौं मैं बार-बार।
बहुतें जीवन उपकार कीन, मेरी बारी मैं बहुत दीन।।
जल आदिक वसुविधि द्रव्यलाय, गुणगान गाय बाजे बजाय।
घननन घननन घण्टा बजन्त, तननं तननं नूपुर तुरन्त।।
ताथेई थेई थेई घुंघरू करन्त, झुकि-२ झुकि-२ फिर पग धरन्त।
बाजत सितार मिरदंग साज, बीणा मुरली मधुरी अवाज।।
करि नृत्य गान बहु गुण बखान, कहँलौं महिमा वरने अगान।
''सेवक'' पर सदा सहाय कीन, विनती मोरी सुनियो प्रवीन।।

घत्ता

पद्मावति माता, तुम गुण गाता, आनन्द दाता, कष्ट हरौ।
सुन माता मोरी, शरण जु तोरी, लखि मम ओरी, धीर धरौ।।

दोहा

हे माता मम उर विषैं, पूरण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।

।।इत्याशीर्वादः।।

जाप्य-मंत्र

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय फणामणिमंडिताय कमठमानविध्वंसनाय सर्वग्रहोच्चाटनाय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

अथ श्री पद्मावती देवी सहस्रनाम बीजाक्षर मन्त्रा

विधि— श्री पद्मावती महादेवी की मूर्ति को मूलस्थान अथवा मण्डप आदि अगर बनाया हो तो वहाँ विराजमान करके दूसरे दिन तक वहीं पर स्थापित रखें, उनके सामने व्रतधारी पद्मासन से बैठकर और बहुत तल्लीन होकर सहस्रनाम के प्रत्येक बीजाक्षर मंत्र को गंभीरता से शुद्ध उच्चारण करते हुये एक-एक चुटकी कुंकुम या लवंग अथवा पुष्प छोड़े, एक-एक शतक पूर्ण होने पर अर्घ्य चढ़ावें। सेचन किये हुये थाली में एकत्रित कुंकुम को महादेवी के सामने वैसे ही रहने दें। पारणा करने के लिए दूसरे दिन भी जिनमंदिर जी जाने के बाद वहां पर सुवासिनियों को सेचन किया हुआ कुंकुम थोड़ा-थोड़ा देकर ''शुभ मंगलम् भवतु'' ऐसा कहकर प्रणाम करें।

१. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मावत्यै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मवर्णायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं पद्महस्तायै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मिन्यै नमः ५. ह्रीं अर्हं पद्मासनायै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मकर्णायै नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मास्यायै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मलोचनायै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मायै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मदलाक्ष्यै नमः ११. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मवनस्थितायै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मालयायै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मागन्धायै नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मरागायै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं उपरागिकायै नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं पद्माप्रियायै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभ्यै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मांग्यै नमः, १९. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मशायिन्यै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मवर्गवत्यै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं पूतायै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं पवित्रायै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं पापनाशिन्यै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभावत्यै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रसिद्धायै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं पार्वत्यै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं पुरवासिन्यै नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञायै नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रह्लादिन्यै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रीतायै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं पीतामायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं पद्माम्बिकायै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं पातालवासिन्यै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णायै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोन्यै नमः३६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रियंवदायै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्तायै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं पाशहस्तायै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं परायै नमः ४०. ॐ ह्रीं

अर्हं पारायै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं परम्परायै नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं पिंगलायै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं परमाये नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं पूरायै नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं पिंगाये नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं प्राच्यै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतीचिकाये नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं परकार्यपिराये नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथ्वये नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं पाथिव्यै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिवीपत्यै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं पल्लवाये नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाये नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं पात्राये नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं पवित्रांग्ये नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं पूतनाये नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभाये नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं पताकिन्यै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं पीताये नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं पन्नगाधिपशेखराये नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं पताकाये नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मकटिन्यै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं पतिमान्याये नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं पराक्रमाये नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं पादाम्बुजधराये नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्ह पुष्टये नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं परमागमबोधिन्यै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्माये नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाये नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नाये नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं पात्रपोषिण्ये नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं पंचवाणगत्यै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं पौत्र्यै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं पाखंडन्यै नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं पितामहयै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रहेलिकाये नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यंचाये नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथुपापौघनाशिन्यै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णचन्द्रमुख्यै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याये नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं पुलोमाये नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णिमाये नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथाये नमः, ८४. ॐ ह्रीं अर्हं पाविन्यै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाये नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं पंडिताये नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं पंडितेडिताये नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं प्राँशुलभ्याये नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमेयाये नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाये नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं प्राकारवर्तिन्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाये नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं प्राथिताये नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं प्राथ्याये नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं पटुदाये नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं पंक्तिपूरण्ये नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं पातालस्थाये नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं पातालेश्वर्यै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणाये नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं प्रेयस्यै नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मावत्यादि प्रेयस्यंत्यशतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।।१।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिष्मत्यै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं मात्रे नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं महाये नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं मायाये नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं महासत्यै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं महादीप्तये नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं मत्यै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं मित्राये नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं महाचन्डयै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाये नमः, ११. ॐ

ह्रीं अर्हं महिष्यै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं मानस्यै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं मेघाये नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं महालक्ष्म्यै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराये नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं मदापहारिण्ये नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं मृग्याये नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं मानिन्यै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं मानशालिन्यै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं मार्गदात्र्यै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं मुहूर्ताये नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं माध्व्यै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं मधुमत्यै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं महयै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वर्यै नमः, २६. ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याये नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताहारविभूषिण्यै नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं महामुद्राये नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञाये नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं महाश्वेताये नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं अतिमोहिन्यै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं मधुप्रियाये नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं मह्याये नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं मायाये नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं मोहध्न्ये नमः ३६. ॐ ह्रीं अर्हं मनस्विन्यै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं माहिष्मत्यै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं महावेगाये नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं मानदाये नमः, ४०. ॐ ह्रीं अर्हं मानहारिण्यै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाये नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं मदनाये नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रवश्याये नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं मुनिप्रियाये नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्ररूपाये नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रज्ञाये नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रदाये नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रसागराये नमः४९. ॐ ह्रीं अर्हं मनःप्रियाये नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं महाकायाये नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाये नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं महाभुजाये नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं महाशयाये नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं महारक्षाये नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं मनोभेदाये नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाये नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिधराये नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताये नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतसहायिन्यै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्त्रवाये नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्च्छनाये नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं मृगाक्ष्यै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं मृगावत्यै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं मृणालिन्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं मनःपुष्टयै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं महाशवत्यै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं महार्थदाये नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं मूलाधाराये नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं मृडान्यै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं मत्ताये नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं मांतंगगामिन्यै नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं मंदाकिन्यै नमः ७३ .ॐ ह्रीं अर्हं महावद्याये नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं मर्यादाये नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं मेघमालिन्यै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं मात्रे नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं मातामह्यै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं मंदगत्यै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं महाकेश्यै नमः, ८०. ॐ ह्रीं अर्हं महीधराये नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं महोत्साहार्यै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं महादेव्यै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं

महिलायै नमः ८४. ॐ ह्रीं अर्हं मानवर्द्धिन्यै नमः. ८५. ॐ ह्रीं अर्हं महाग्रहायै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं महाहरायै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं महामायै नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमार्गप्रकाशिन्यै नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं मान्यायै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं मानवत्यै नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं मान्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं मणिनूपुरशोभिन्यै नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं मणिकान्तिधरायै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं मीनायै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं महामतिप्रकाशिन्यै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं महातन्त्रायै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं महादक्षायै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं मेघायै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं मुग्धायै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणायै नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिष्मत्यादिमहागुणान्तशतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।।२।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं जिनमात्रे नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्रायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं जयंत्यै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं जगदीश्वर्यै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं जेयायै नमः ६ . ॐ ह्रीं अर्हं जयवत्यै नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं जायायै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं जनन्यै नमः, ९. ॐ ह्रीं अर्हं जनपालिन्यै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्मात्रे नमः ११. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्मायायै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जितायै नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं जागरायै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं जजरायै नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं जेत्र्यै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं जमुनायै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं जलवासिन्यै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं योगिन्यै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं योगमूलायै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धात्र्यै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धरायै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं योगपट्टधरायै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वालायै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतीरूपायै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वालिन्यै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वालामुख्यै नमः, २८. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वालामालायै नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं जाज्वल्यायै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितायै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं जैनेश्वर्य नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं जिनाधारायै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं जीवन्यै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं यशःपालिन्यै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं यशोदायै नमः ३६. ॐ ह्रीं अर्हं ज्यायस्यै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठायै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योत्स्नायै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वरनाशिन्यै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वरलोपायै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं जराजीर्णायै नमः:४२. ॐ ह्रीं अर्हं जाँगुलाऽमयतर्जिन्यै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं युगभद्रायै नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्मित्रायै नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं यंत्रिण्यै नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं जनभूषणायै

नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं योगेश्वर्यै नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं योगांगायै नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं योगयुक्तायै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिजायै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं यथार्थवादिन्यै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं जांबूनदकान्तिधरायै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं जयायै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं निमेषायै नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं नर्तिन्यै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं तायै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं नारायण्यै नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदायै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं नीलात्मिकायै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं निराकारायै नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं निराधारायै नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं निराश्रयायै नमः:६३. ॐ ह्रीं अर्हं नृपवश्यायै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं निरामान्यायै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं निःसंगायै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं नृपनंदिन्यै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं नृपधर्ममय्यै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं नीत्यै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं नूतन्यै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं नरपालिन्यै नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं नंदायै नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दवत्यै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं निष्ठायै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं नीरदायै नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं नागवल्लभायै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं नृत्यप्रियायै नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दिन्यै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं नित्यायै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं नैकायै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं निरामयायै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं नागापाशधरायै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं नौकायै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकायै नमः ८४. ॐ ह्रीं अर्हं निरागसायै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं नागवल्लयै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं नागकन्यायै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं नागिन्यै नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं नागकुण्डल्यै नमः, ८९. ॐ ह्रीं अर्हं निद्रायै नमः, ९०. ॐ ह्रीं अर्हं नागदमन्यै नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं नेत्र्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं नाराचवर्पिण्यै नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं निर्विकारायै नमः:९४. ॐ ह्रीं अर्हं निर्वैरायै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं नागनाथायै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं नागकल्पभायै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं नागस्वामिन्यै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं नागरमण्यै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं निर्लोभायै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं नित्यानन्दविधायिन्यै नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनमात्रादिनित्यानन्दविधायिन्यन्त शतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।।३।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं वज्रहस्तायै नमः२. ॐ ह्रीं अर्हं वरदायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं वज्रशीलायै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं वरुथिन्यै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं वज्रायै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं वज्रायुधायै नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं वाण्यै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं विजयायै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिन्यै नमः १०.ॐ ह्रीं अर्हं वसुदायै नमः

११. ॐ ह्रीं अर्हं बलदायै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं वीरायै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं विषयायै नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं विषमर्दिन्यै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं वसुंधरायै नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं वरायै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वायै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं वर्णिन्यै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं वायुगामिन्यै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं बहुवर्णायै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं बीजवत्यै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यायै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धिमत्यै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं विभायै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं वेधायै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं वामवत्यै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं वामायै नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं विनिद्रायै नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं वंशभूषणायै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं वरारोहायै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं विशोकायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं वेदरूपायै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं विभूषणायै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं विशालायै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं वारुण्यै नमः ३६. ॐ ह्रीं अर्हं वल्यायै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं बालिकायै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं बालकप्रियायै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं वर्तिन्यै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं विषध्न्यै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं बालायै नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं विविक्तायै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं वनवसिन्यै नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं वंद्यायै नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं विधिसुतायै नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं वेलायै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोन्यै नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं बुधप्रियायै नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं बलदायै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं वीरमात्रे नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं वीरस्वै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं वीरनन्दिन्यै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं वरायुधधरायै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं वेषायै नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं वारिदायै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं बलशालिन्यै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धमात्रे नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं वैद्यमात्रे नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं बंधुरायै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं बधुरुपिण्यै नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यावत्यै नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं विशालाक्ष्यै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं वेदमात्रे नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं विभाश्वर्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं वात्याल्यै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं विषमायै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं वीशायै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेदांगधारिण्यै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं वेदमार्गरतायै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तायै नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं बिलोमायै नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं बादशालिन्यै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमात्रे नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं विषंकायै नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं वंशजायै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदीपिकायै नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं बसंतरूपिण्यै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं वर्षायै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं विमलायै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं विविधायुधायै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं विज्ञानिन्यै नमः, ८२. ॐ ह्रीं अर्हं विपाशायै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं विपंच्यै नमः ८४. ॐ ह्रीं

अर्हं बधमोक्षिण्यै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूप वत्यै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं वृद्धायै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं विनीतायै नमः८८. ॐ ह्रीं अर्हं विशिखाबिभायै नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं व्यालिन्यै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं व्याललीलायै नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं व्याप्तव्याधिविनाशिन्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं विमोहायै नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं वाणसंदोहायै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं वर्द्धिन्यै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं वर्द्धमानकायै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं व्यालेश्वरप्रियायै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणप्रेयस्यै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं वसुदायिन्यै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेश्वर्यै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं व्यन्तरेन्द्रीवरदात्र्ये नमः

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रहस्तादि-व्यन्तरेन्द्रीवरदात्र्यन्त शतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।।४।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं कामदायै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं कमलायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं काम्यायै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं कामागायै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं काम्यसाधिन्यै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं कलावत्यै नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं कलापूर्णायै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं कलाधरायै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं कनीयस्यै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं कामिन्यै नमः ११. ॐ ह्रीं अर्हं कमनीयांगायै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं कनत्कांचन सन्निभायै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं कात्यायन्यै नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिदायै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं केवलायै नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं कामरुपिण्यै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं कानीनायै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं कमलामोदायै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं कम्रायै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तायै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं करप्रियायै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं कायस्थायै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं कालिकायै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं काल्यै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं कुमार्यै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं कालरुपिण्यै नमः, २७. ॐ ह्रीं अर्हं कालायै नमः२८. ॐ ह्रीं अर्हं कारायै नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं कामधेन्वै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं कास्यै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं कमललोचनायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं कुन्तलायै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं कनकाभायै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं काश्मीरकुंकुमप्रियायै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं कृपावत्यै नमः ३६. ॐ ह्रीं अर्हं कुण्डलिन्यै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं कुण्डलाकरशायिन्यै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं कर्कशायै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं कोपलायै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं काष्ठायै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं कोलिक्यै नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं कुलबालिकायै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं कालचक्रधरायै नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं कल्पायै नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं कलिकायै नमः ४६. ॐ ह्रीं

अर्हं काम्यकारिण्यै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं कविप्रियायै नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं कौशाम्ब्यै नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं कारिण्यै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं कोषबद्धिन्यै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं कुशावत्वै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं करालाभायै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं कौशास्थायै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिवर्द्धिन्यै नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं कादम्बर्यै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं कोशधरायै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं कौशाक्ष्यै नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं कौशावासिन्यै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नयै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं कालहनन्यै नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं कौमार्ये नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं कुलजायै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं कृत्यै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं कैवल्यदायिन्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं केकायै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मधन्यै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं कालवर्जिन्यै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं कलंकरहितायै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं कन्यायै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं करुणालयवासिन्यै नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं कपूर्ररामोदनिःश्वासयै नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं कामबीजवल्यै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं कल्यै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं कुलीनायै नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं कुन्दपुष्पाभायै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं कुक्कुटीगवाहिन्यै नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं कलिप्रियायै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं कामवाणायै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं कमठोपरिशायिन्यै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं कठोरायै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं कठिनायै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं क्रूरायै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं कन्दलायै नमः ८४. ॐ ह्रीं अर्हं कदलीप्रियायै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं कोविन्टौ नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधरुपायै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रहुँकारवर्तिन्यै नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं कम्बोजिन्यै नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं काण्डरुपायै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं कोदण्डकरधरिण्ये नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं कुहुक्रीडावत्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं क्रीडायै नमः, ९३. ॐ ह्रीं अर्हं कुमारानंददायिन्यै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं कुतूहलायै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं केतुरुपायै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं केतक्यै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं कमलासनायै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं कोपिन्यै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं कोपरुपायै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं कुसुमावासवासिन्यै नमः ॐ ह्रीं अर्हं कामदादिकुसुमावासवासिन्यन्तशतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।। ५।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं सरस्वत्यै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्राक्ष्य नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं सरोजगायै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं शिवायै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यै नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं सुधारुपायै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं शिवमायायै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं सितायै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं शुभायै नमः

११. ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधायै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं सुमुख्यै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यायै नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं सावित्र्यै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं सामगायिन्यै नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं सुरोत्तमायै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभायै नमः, १८. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीरूपायै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रशालिन्यै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तायै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं सुलोचायै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं साध्वयै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाध्यायै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं सुधात्मिकायै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं शारदायै नमः, २६. ॐ ह्रीं अर्हं सरलायै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं सारायै नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं सुवेण्यं नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं सुयशःप्रदायै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं शंकायै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं शमतायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धायै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं शक्रमान्यायै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं शुभंकर्यै नमः, ३५. ॐ ह्रीं अर्हं शुधाहाररतायै नमः, ३६. ॐ ह्रीं अर्हं श्मायायै नमः, ३७. ॐ ह्रीं अर्हं शमायै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं शलवत्यै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं शरायै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं शीतलायै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं सुभगायै नमः, ४२. ॐ ह्रीं अर्हं साव्यैं नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं सुकेश्यै नमः, ४४. ॐ ह्रीं अर्हं शैलवासिन्यै नमः, ४५. ॐ ह्रीं अर्हं शालिन्यै नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिण्यै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं सोमायै नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं सुभिक्षायै नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रेयस्यै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णायै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं शोणवर्णायै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं सुन्दर्यै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं सुरसुन्दर्यै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं शक्तयै नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं सुषायै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं शौरिकायै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं सेव्यायै नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं श्रियै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं सुजनाचिंतायै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं शिवदूत्यै नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतवर्णाषै नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं शुभ्राभायै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं शोभनाशिखायै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं सिंहिकायै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं सकलायै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं शोभायै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिन्यै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं शिवपोषिण्यै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयस्कयै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयस्यैं नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं शौर्ये नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं सौदामिन्यै नमः, ७३. ॐ ह्रीं अर्हं शुच्यै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं सौभागिन्यै नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं शोषिण्यै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धायै नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं सुमनःप्रियायै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं सौरभेय्यै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं सुसुरम्यै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतातपत्रधारिण्यै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं शृंगारिण्यै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवक्त्र्यै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थायै नमः ८४. ॐ

ह्रीं अर्हं शीलभूषणायै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याथिन्यै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं संध्याभायै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं शच्यै नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्यै नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदायै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं संहारकारिण्यै नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं सप्तार्चिषे नमः९३. ॐ ह्रीं अर्हं सफलायै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं अर्ध्यदायै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं संध्यायै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं सिन्दूरवर्णाभायै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं सिन्दूरतिलकप्रियायै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं सारंगायै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं सुतरायै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं शुभभाषिण्यै नमः

ॐ ह्रीं अर्हं सरस्वत्यादिशुभभाषिण्यन्तशतनामधारिण्ये अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।। ६।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वर्यै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं भूषणायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनायै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं भूमिपप्रियायै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं भूमिगर्भायै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं भूपबंद्यायै नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं भुजंगेशप्रियायै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं भुजंगाम्बिकायै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं भुजंगभूषणायै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं भोगाये नमः ११. ॐ ह्रीं अर्हं भुजंगकरशायिन्यै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं भृंग्यै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं भीतिरायै नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं भाग्यायै नमः, १५. ॐ ह्रीं अर्हं भीमभीमाट्टहासिन्यै नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं भारत्यै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं भवत्यै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं भंग्यै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं भगिन्यै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं भोगमंदिरायै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं भद्रिकायै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं भद्ररूपायै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं भूतत्मायै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभंजिन्यै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं भवान्यै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं भैरव्यै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं भीमायै नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं भामिन्यै नमः, २९. ॐ ह्रीं अर्हं भ्रमनाशिन्यै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं भुजगिन्यै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं भुशुंडयै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं भेदिन्य नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं भूम्यै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं भूषणायै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं भिन्नायै नमः ३६. ॐ ह्रीं अर्हं भाग्यवत्यै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं भाषायै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं भोगिन्यै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं भोगवल्लभायै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं भूरिदायै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं भुक्तिदायै नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं भुक्तयै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं भवसागरतारिण्यै नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं भास्वत्यै नमः, ४५. ॐ ह्रीं अर्हं भाश्वरायै नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं भूत्यै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं

भूतिदायै नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं भूतिवर्द्धिन्ये नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं भाग्यदायै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं भोगदायै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं भोग्यायै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं भाविन्यै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं भवनाशिन्यै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं भिक्षवे नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं भट्टारिकायै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं भीबै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं भ्रामर्यै नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं भ्रमयै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं भवायै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं भण्डिन्ये नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं भाण्डदायै नमः, ६२. ॐ ह्रीं अर्हं भण्डयै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं भल्लक्यै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं भूरिभजिन्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं भूमिगायै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं भूमिदायै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं भाष्यायै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं भक्षिण्यै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं भृगुरजिन्यै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं भाराक्रान्तायै नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं भूमिभूषाये नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं भंजिन्यै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं भूमिपालिन्यै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं भद्राये नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं भगवत्यै नमः,७६. ॐ ह्रीं अर्हं भक्तायै नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं वत्सलायै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं भाग्यशालिन्यै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं खेचर्य नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं खड्गहस्तायै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं खण्डिन्यै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं खलमर्दिन्यै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं खट्वांगधारिण्यै नमः ८४. ॐ ह्रीं अर्हं खट्वायै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं खड्गायै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं खगवाहिन्ये नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं षट्टचक्रभेदिन्ये नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं ख्यातायै नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं खगपूज्यायै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं खगेश्वर्यै नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं लागल्यै नमः, ९२. ॐ ह्रीं अर्हं क्रीडायै नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं लेखायै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं लेखिन्यै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं ललितालतायै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्म्यै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मवत्यै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्यायै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं लाभदायै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं लीभवर्जितायै नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वर्यादि-लोभवर्जितान्तशतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।। ७।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं लीलावत्यै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं ललामाभायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं लोहमुद्रायै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं लिपिप्रयायै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं लोकेश्वर्ये नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं लोकमात्रे नमः, ७. ॐ ह्रीं अर्हं लब्ध्यै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं लोकन्तपालिन्यै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं लीलायै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं ललामदायै नमः ११. ॐ ह्रीं अर्हं लीलायै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं

लावण्यायै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं ललितायै नमः १४. ॐ ह्रीं अर्हं अर्थदायै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं लोभघ्न्यै नमः १६. ॐ ह्रीं अर्हं लम्बन्यै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं लंकायै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं लक्षणायै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं लक्षवर्जितायै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं उमायै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं उर्वश्यै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं उदीच्यै नमः, २३. ॐ ह्रीं अर्हं उद्योतायै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं उद्योतकारिण्यै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं उदारिष्यै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं उद्वरोदक्यायै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं उद्विज्जायै नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं इदकवासिन्ये नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं उदाहारायै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमायै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं ओषध्यै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं उदधितरिण्यै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तरायै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तरवादिन्यै नमः, ३६. ॐ ह्रीं अर्हं उद्वरायै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं उद्वरनिवासिन्यै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं उत्कलिन्यै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं उत्कलिन्यायै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं उत्कीर्णायै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं उत्करूपिण्यै नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं ऊँकारायै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं ओंकाररूपायै नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं अम्बिकायै नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं अम्बरचारिन्यै नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाशायुजायै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं अन्तायै नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं अणिमादिगुणसंयुतायै नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनायै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तायै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं कोदण्डपरिहासिन्यै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं अर्पणायै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं अर्थाद्यै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं बिन्दुधरायै नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं अलोकायै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं अलल्यालि वांगनायै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाये नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं आनन्ददायै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं अलकायै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं लज्जायै नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिप्रदायिकायै नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं अव्यक्तायै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं अश्रमयायै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्त्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं अजीर्णायै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं अजीर्णहारिण्यै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं अहंकृत्यायै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं अजनायै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं अहंकारायै नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं अरात्यै नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं अन्तदायै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं अनुरूपायै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं अर्थमूलायै नमः, ७५. ॐ ह्रीं अर्हं क्रीड़ायै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं कैरवायै नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं पालिन्यै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं अनोकहासुतायै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्यायै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्यायै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगामिन्यै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरायै

नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं आराधितायै नमः ८४. ॐ ह्रीं अर्हं आधारायै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं उद्गधायै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं गंधज्ञालिन्यै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं अलकायै नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं अलम्बनायै नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं अलैध्यायै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं शीतोये नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं शेखरधारिण्यै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं आकर्षणायै नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं अधरायै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं अरागायै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं मोदजायै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं मोदधारिण्यै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं अहिनाथायै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं अहिप्रियायै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं अहिप्राणायै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं अहोश्वर्यै नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं लीलावत्यादि-अहोश्वर्यन्त अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।। ८।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्रायै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यम्बिकायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं तंत्र्यै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरायै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरभैरव्यै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपृष्ठाय नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिफणायै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं तारायै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं तोतिलायै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं त्वरितायै नमः ११. ॐ ह्रीं अर्हं तुलायै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं तपःप्रियायै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं तापस्यै नमः, १४. ॐ ह्रीं अर्हं तपोनिष्ठायै नमः, १५. ॐ ह्रीं अर्हं तपस्विन्यै नमः, १६. ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यदीपिकायै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं त्रेधायै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिसन्ध्यायै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपदाश्रयायै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिरुपायै नमः २१. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपथात्राणायै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं तारायै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपूरसुन्दर्यै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनायै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपथगायै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं तारामानविमर्दिन्यै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मप्रयाये नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदायै नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मिण्यै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालिन्यै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं धरायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं धरधरायै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं धारायै नमः ३४. ॐ ह्रीं अर्हं धात्र्यै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मागपालिन्यै नमः ३६. ॐ ह्रीं अर्हं धौतायै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं धृत्यै नमः ३८. ॐ ह्रीं अर्हं धुर्ये नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं धीरायै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं धुनुन्यै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं धनुर्धरायै नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्माण्यै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मगोत्रायै नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं ब्राह्मण्कै नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मपालिन्यै नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं ब्राह्म्यै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं विद्युत्प्रभायै नमः, ४८. ॐ ह्रीं अर्हं वीरायै नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं वीणायै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं वासवपुजि-

तायै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं गीतप्रियायै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं गर्भधरायै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं गर्भदायै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं गजगामिन्यै नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं गंगायै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं गोदावयै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं गोर्गायै नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं गायत्र्यै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं गणपालिन्यै नमः, ६०. ॐ ह्रीं अर्हं गोचर्ये नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं गोमत्र्यै नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं गुर्व्यै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं गन्धायै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं गान्धारिण्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं गुहायै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं गरीयस्यै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं गुणोपेतायै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठायै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं गरमर्दिन्यै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरायै नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं गुरुरुपायै नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं गीतायै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं गर्वापहारिण्यै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं गृहिण्यै नमः ७५. ॐ ह्रीं अर्हं गृहिण्यै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं गौर्ये नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं गन्धार्यै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं गन्धवासिन्यै नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं गारुडयै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं ग्रासिन्यै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं गठायै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं गेहिन्यै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं गुणदायिन्यै नमः ८४. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रमाध्यायै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रधारायै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं चित्रिण्यै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं चित्ररुपिण्ये नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं चर्चितायै नमः ८९. ॐ ह्रीं अर्हं चतुरायै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं चित्रायै नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं चित्रमायायै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्भुजायै नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्राभायै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रवर्णायै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रिण्यै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रधारिण्यै नमः ९७. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रायुधायै नमः ९८. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रधरायै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं चण्डयै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं चण्डपराक्रमायै नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्रादि-चण्डपराक्रमान्त शतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।। ९।

१. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रेश्वर्यै नमः २. ॐ ह्रीं अर्हं चसूचिन्त्यायै नमः ३. ॐ ह्रीं अर्हं चंचलायै नमः ४. ॐ ह्रीं अर्हं चंचलात्मिकायै नमः ५. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रलेखायै नमः ६. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रभागायै नमः ७. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रिकायै नमः ८. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रमन्डलायै नमः ९. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रकान्त्यै नमः १०. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रमश्रियै नमः ११. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै नमः १२. ॐ ह्रीं अर्हं चतुःसमुद्रपारान्तायै नमः १३. ॐ ह्रीं अर्हं चतुराश्रमवासिन्यै नमः, १४. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुख्यै नमः १५. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रमुख्यै नमः

१६. ॐ ह्रीं अर्हं चतुवर्गफलप्रदायै नमः १७. ॐ ह्रीं अर्हं चित्स्वरूपायै नमः १८. ॐ ह्रीं अर्हं चिदानन्दायै नमः १९. ॐ ह्रीं अर्हं चितामन्यै नमः २०. ॐ ह्रीं अर्हं चिरतन्यै नमः, २१. ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रहासायै नमः २२. ॐ ह्रीं अर्हं चामुण्डायै नमः २३. ॐ ह्रीं अर्हं चेतनायै नमः २४. ॐ ह्रीं अर्हं चौर्यतर्जिन्यै नमः २५. ॐ ह्रीं अर्हं चैत्यप्रियायै नमः २६. ॐ ह्रीं अर्हं चैत्यलीनायै नमः २७. ॐ ह्रीं अर्हं चिन्ततार्थफलप्रदायै नमः २८. ॐ ह्रीं अर्हं ह्रींरूपायै नमः २९. ॐ ह्रीं अर्हं हंसगमन्यै नमः ३०. ॐ ह्रीं अर्हं हाकिन्यै नमः ३१. ॐ ह्रीं अर्हं हिंगुलायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अर्हं हितायै नमः ३३. ॐ ह्रीं अर्हं हलायै नमः, ३४. ॐ ह्रीं अर्हं हलधरायै नमः ३५. ॐ ह्रीं अर्हं हालायै नमः ३६. ॐ ह्रीं अर्हं हंसवर्णायै नमः ३७. ॐ ह्रीं अर्हं हर्षदायै नमः, ३८. ॐ ह्रीं अर्हं हिमान्यै नमः ३९. ॐ ह्रीं अर्हं हरित्तायै नमः ४०. ॐ ह्रीं अर्हं हीरायै नमः ४१. ॐ ह्रीं अर्हं हर्षिंग्यै नमः ४२. ॐ ह्रीं अर्हं हरिमर्दिन्यै नमः ४३. ॐ ह्रीं अर्हं दुर्ललितादरायै नमः ४४. ॐ ह्रीं अर्हं गौर्ये नमः ४५. ॐ ह्रीं अर्हं गिरे नमः ४६. ॐ ह्रीं अर्हं गाथायै नमः ४७. ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गायै नमः ४८. ॐ ह्रीं अर्हं दुर्लंलितादरायै नमः ४९. ॐ ह्रीं अर्हं दामिन्यै नमः ५०. ॐ ह्रीं अर्हं दीर्घिकायै नमः ५१. ॐ ह्रीं अर्हं दुग्धायै नमः ५२. ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गमायै नमः ५३. ॐ ह्रीं अर्हं दुर्लभोदयायै नमः ५४. ॐ ह्रीं अर्हं द्वरिकायै नमः ५५. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणायै नमः ५६. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षायै नमः ५७. ॐ ह्रीं अर्हं दीक्षायै नमः ५८. ॐ ह्रीं अर्हं दीक्षितपुजितायै नमः ५९. ॐ ह्रीं अर्हं दमयन्त्यै नमः ६०. ॐ ह्रीं अर्हं दानवत्यै नमः ६१. ॐ ह्रीं अर्हं दयुत्यै नमः ६२. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तायै नमः ६३. ॐ ह्रीं अर्हं दीवागत्यै नमः ६४. ॐ ह्रीं अर्हं दरिद्रध्न्यै नमः ६५. ॐ ह्रीं अर्हं वैरिदूरायै नमः ६६. ॐ ह्रीं अर्हं दरायै नमः ६७. ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गतिनाशिन्यै नमः ६८. ॐ ह्रीं अर्हं दर्प्पध्न्यै नमः ६९. ॐ ह्रीं अर्हं दैत्यनाशायै नमः ७०. ॐ ह्रीं अर्हं वंशिन्यै नमः ७१. ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनप्रियायै नमः ७२. ॐ ह्रीं अर्हं वृषप्रियायै नमः ७३. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभायै नमः ७४. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाषढायै नमः, ७५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रबोधिन्यै नमः ७६. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मायै नमः ७७. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मगत्यै नमः ७८. ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्ष्णाये नमः ७९. ॐ ह्रीं अर्हं धनमालायै नमः ८०. ॐ ह्रीं अर्हं धनध्वन्यै नमः ८१. ॐ ह्रीं अर्हं छायायै नमः ८२. ॐ ह्रीं अर्हं छत्रच्छव्यै नमः ८३. ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरायै नमः ८४. ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरदायै नमः ८५. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्ररक्षिण्यै नमः ८६. ॐ ह्रीं अर्हं अमरात्मनै नमः ८७. ॐ ह्रीं अर्हं अतिरात्र्यै नमः ८८. ॐ ह्रीं अर्हं रगिन्यै नमः, ८९. ॐ ह्रीं

अर्हं रतिदारुषायै नमः ९०. ॐ ह्रीं अर्हं स्थूलायै नमः ९१. ॐ ह्रीं अर्हं स्थूलतरायै नमः ९२. ॐ ह्रीं अर्हं स्थूल्यै नमः ९३. ॐ ह्रीं अर्हं स्थंडिलशयायै नमः ९४. ॐ ह्रीं अर्हं स्थंडिलवासिन्यै नमः ९५. ॐ ह्रीं अर्हं स्थिरायै नमः ९६. ॐ ह्रीं अर्हं स्थणुमत्यै नमः, ९७. ॐ ह्रीं अर्हं दैव्यै नमः, ९८. ॐ ह्रीं अर्हं घनायै नमः ९९. ॐ ह्रीं अर्हं घोरनिनादिन्यै नमः १००. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकयै नमः १०१. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमवत्यै नमः,१०२. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमदायै नमः १०३. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमवर्द्धिन्यै नमः १०४. ॐ ह्रीं अर्हं शैलूषरुपिण्यै नमः १०५. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टोयै नमः १०६. ॐ ह्रीं अर्हं संसारार्णवतारिण्य नमः १०७. ॐ ह्रीं अर्हं सदासहायिन्यै नमः १०८. ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वर्यै नमः।
ॐ ह्रीं अर्हं चक्रेश्वर्यादि-परमेश्वर्यन्तष्टोत्तरशतनामधारिण्यै श्री पद्मावती महादेव्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।। १०।।
इति श्री पद्मावती देवी अष्टोत्तर सहस्त्रनाम बीजाक्षर मन्त्रा सम्पूर्णाः।।१०८।।

शांतिधारा

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः।।१।।
शांतिधारा करें।

विसर्जन-
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सरस्वती देवि! गच्छ-२ जः जः जः।
ॐ ह्रीं श्री पद्मावती देवि! गच्छ-२, जः जः जः स्वाहा।

आह्वानम् नैव जानामि, नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनम् न जानामि, क्षमस्य परमेश्वरी।।

श्री पद्मावती माता की आरती

पद्मावती माता, दर्शन की बलिहारियां।। दो बार।।
पार्श्वनाथ महाराज विराजे मस्तक ऊपर थारे,
माता मस्तक ऊपर थारे।
इन्द्र, फणेन्द्र, नरेन्द्र सभी मिल, खड़े रहें नित द्वारे।
हे पद्मावती माता, दर्शन की बलिहारियां।। दो बार।।
जो जीव थारो शरणो लीनो, सब संकट हर लीनो,
माता सब संकट हर लीनो।
पुत्र, पौत्र, धन, धान्य, सम्पदा, मंगलमय कर दीनो।
हे पद्मावती माता, दर्शन की बलिहारियां।। दो बार।।
डाकिनि, शाकिनि, भूत, भवानी, नाम लेत भग जायें,
माता नाम लेत भग जायें।
वात, पित्त, कफ, कुष्ट मिटे अरू तन सुखमय हो जावे।
हे पद्मावती माता, दर्शन की बलिहारियां।। दो बार।।
दीप, धूप, अरु पुष्प आरती, ले आरति को आयो,
माता ले दर्शन को आयो।
दर्शन करके मात तिहारो, मनवांछित फल पायो।
हे पद्मावती माता, दर्शन की बलिहारियां ।। दो बार।।
जब भक्तों पर पीर पड़ी है रक्षा तुमने कीनी,
माता रक्षा तुमने कीनी।
वैरियों का अभिमान चूरकर इज्जत दूनी दीनी।
हे पद्मावती माता, दर्शन की बलिहारियां।।
हे पद्मावती माता, आरति की बलिहारियां।।

❖❖❖❖❖❖

क्षेत्रपाल पूजा

क्षेत्रपालाय यज्ञेऽस्मिन्नेतत्क्षेत्राधिरक्षणे।

बलिं दिशामि दिग्यग्नेर्वेद्यां विघ्नविघातिने।।१।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपाल! आगच्छ आगच्छ संवौषट्! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति पुष्पाञ्जलिः।

क्षेत्रपाल का तेल से अभिषेकः-

सद्यस्केन सुगंधेन स्वच्छेन बलहेन च।

स्नपनं क्षेत्रपालस्य तैलेन प्रकरोम्यहं।।२।।

ॐ ह्रीं तैलेन क्षेत्रपालं अभिषेचयामि इति स्वाहा।

सिंदूर चढ़ाने का श्लोकः-

सिंदूरैरारूणाकारैः पीतवर्णैः सुसंभवैः।

चर्चनं क्षेत्रपालस्य सिंदूरैः प्रकरोम्यहं।।३।।

ॐ ह्रीं सिंदूरैः क्षेत्रपालार्चनं करोमीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल के लिए अर्घ्य-

भोः क्षेत्रपाल! जिनपप्रतिमांकभाल।

दंष्ट्राकराल जिनशासनवैरिकाल।।

तैलाहिजन्म गुड चंदन पुष्प धूपैः।

भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले।।४।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे क्षेत्रपाल! इदं जलादिकं अर्चनं गृहाण गृहाण।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधा स्वाहा।

इति क्षेत्रपालार्चनं।

❖❖❖❖❖❖

क्षेत्रपाल बाबा की आरती

करूँ आरती क्षेत्रपाल की, जिनपद सेवक रक्षपाल की।

विजय वीर अरु मणीभद्र की, अपराजित भैरव आदि की।।

करूँ आरती............।।टेक.।।

सिर पर मणिमय मुकुट विराजे, कर में आयुध त्रिशूल सुराजे।

कूकर वाहन शोभा भारी, भूत प्रेत दुष्टन भयकारी।।

करूँ आरती...........।।१।।

लंकेश्वर ने ध्यान जो कीना, अंगद आदि उपद्रव कीना।

जभी आपने रक्षा कीनी, उपद्रव टारि शान्तिमय कीनी।।

करूँ आरती...........।।२।।

जिन भक्तन की रक्षा करते,दुःख दारिद्र सभी भय हरते।

पुत्रादिक वांछा पूरी करते, इसीलिए हम आरति करते।।

करूँ आरती...........।।३।।

❖❖❖❖❖❖

अनावृतयक्ष पूजा

मेरोरीशानभागे कुरुषु मणिमयस्योत्तरेषु स्थितस्य।।
श्रीजंबूभूरुहस्य स्थितिजुषमनिशं पूर्वशाखास्थसौधे।।
शंखं चक्रं च कुंडिं दधतमुरुकरैररक्षमालां च कृष्णंष्ट्व।।
पक्षीन्द्रारुढमस्या भवदिशि विधिनानावृतेन्द्रं यजामि।।

ओं दशदिशाधिनाथं त्रैलोक्यदंडनायकं जंबूद्वीपाधिपतिं गरुडपृष्ठमारूढं स्निग्धभृंगांजनाभमक्षसूत्रकमंडलुव्यग्रहस्तं चतुर्भुजं शंखचक्रविधृतभुजादंडं यक्षिणीसहितं सपरिजन-सपरिवारमनावृतं देवमाव्हानयामहे स्वाहा।।हे अनावृत यक्ष! आगच्छ २ संवौषट्०।।पुष्पांजलिं।। अनावृताय स्वाहा।। अनावृतपरिजनाय स्वाहा। अनावृतानुचराय स्वाहा।। अनावृतमहतराय स्वाहा।। अग्नये स्वाहा।। अनिलाय स्वाहा।। वरुणाय स्वाहा।। प्रजापतये स्वाहा।। ॐ स्वाहा।। भूः स्वाहा।। भुवः स्वाहा।। स्वः स्वाहा।। ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा।। अनावृताय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।

अनावृत यक्ष अर्घ्य (भाषा)

मेरू के उत्तर दिश में है उत्तरकुरु भोग भूमि उत्तम।
उसमें मणिमय जंबूतरु की पूरब शाखा पर देवभवन।।
उस पर रहता है यक्ष अनावृत देव निजी परिवार सहित।
जंबूद्वीपाधिपति दशदिश का स्वामी यह बहुशक्ति सहित।।

दोहा- कृष्ण वर्ण चउभुज धरे, गरुड़ासन सुखकार।
शंख चक्र कुन्डी तथा, अक्षमाल कर धार।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीप रक्षक अनावृत यक्ष देव! अत्र आगच्छ २, पुष्पांजलिः। इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं दीपं धूपं चरुं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ इति स्वाहा।।

❖❖❖❖❖❖

त्रिषष्टिज्ञानसूत्राणि

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

अपने ज्ञान की वृद्धि हेतु निम्न मंत्रों का प्रतिदिन पाठ करें। विशेष रूप से आश्विन शुक्ला एकम् से आश्विन शुक्ला पूर्णिमा तक १५ दिन तक शारदा पक्ष में इन सूत्र पदों का प्रातःकाल पाठ करने से ज्ञान में पूर्ण चन्द्रमा की तरह वृद्धि होगी।

अनुष्टुप

ज्ञानमत्यै नमस्तुभ्यं, वरदे ज्ञानदायिनि।
मंत्रारम्भं करिष्यामि, शुद्धिर्भवतु मे सदा।।१।।

१. ॐ ह्रीं ज्ञानमत्यै नमः २. ॐ ह्रीं आर्यिकायै नमः ३. ॐ ह्रीं गणिन्यै नमः ४. ॐ ह्रीं जगन्मात्रे नमः ५. ॐ ह्रीं चारित्रचन्द्रिकायै नमः ६. ॐ ह्रीं युगप्रवर्तिकायै नमः ७. ॐ ह्रीं बालब्रह्मचारिण्यै नमः ८. ॐ ह्रीं वीरमत्यै नमः ९. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः १०. ॐ ह्रीं तीर्थोद्धारिकायै नमः ११. ॐ ह्रीं वात्सल्यमूर्तये नमः १२. ॐ ह्रीं उपचारमहाव्रतिकायै नमः १३. ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारिण्यै नमः १४. ॐ ह्रीं उपचार षट्त्रिंशतमूलगुणधारिण्यै नमः १५. ॐ ह्रीं पिण्डस्थध्यानसंयुक्तायै नमः १६. ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्तायै नमः १७. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपप्रेरिकायै नमः १८. ॐ ह्रीं ज्ञानज्योतिप्रवर्तिकायै नमः १९. विधानवाचस्पतये नमः २०. ॐ ह्रीं साहित्यवारिधये नमः २१. ॐ ह्रीं प्रथमग्रन्थरचनाकर्त्र्यै नमः २२. ॐ ह्रीं अष्टसहस्त्रीअनुवादिकायै नमः २३. ॐ ह्रीं ज्ञानध्यानसमन्वितायै नमः २४. ॐ ह्रीं सन्मार्गदर्शिकायै नमः २५. ॐ ह्रीं ब्राह्मीपथप्रदर्शिकायै नमः २६. ॐ ह्रीं आवश्यकनिरतायै नमः २७. ॐ ह्रीं शिष्यानुग्रहप्रवीणायै नमः २८. ॐ ह्रीं हितोपदेशिकायै

नमः २९. ॐ ह्रीं स्थितिकरणांगधारिकायै नमः ३०. ॐ ह्रीं अपरिस्त्राविगुणसंयुक्तायै नमः ३१. ॐ ह्रीं कौमार्यतपोयुक्तायै नमः ३२. ॐ ह्रीं अप्रतिमप्रतिभायै नमः ३३. ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थस्वरूपायै नमः ३४. ॐ ह्रीं सुकुमारिकायै नमः ३५. ॐ ह्रीं षट्खंडागम ज्ञानसंयुक्तायै नमः ३६. ॐ ह्रीं सिद्धान्तचिन्तामणिटीकाकर्त्र्यै नमः ३७. ॐ ह्रीं सिद्धान्तचक्रेश्वर्यै नमः ३८. ॐ ह्रीं द्विशतग्रन्थरचनाकर्त्र्यै नमः ३९. ॐ ह्रीं पूर्णशशिकलायै नमः ४०. ॐ ह्रीं अंगांशश्रुतधारिकायै नमः ४१. ॐ ह्रीं गुरुपरम्परारक्षिकायै नमः ४२. ॐ ह्रीं पाठिकायै नमः ४३. ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरविनाशकायै नमः ४४. ॐ ह्रीं क्षमाशालिन्यै नमः ४५. ॐ ह्रीं दृढ़संकल्पिन्यै नमः ४६. ॐ ह्रीं श्वेतवस्त्रधारिण्यै नमः ४७. ॐ ह्रीं मयूरपिच्छिकासहितायै नमः ४८. ॐ ह्रीं जिनवाणी चिन्हितायै नमः ४९. ॐ ह्रीं ध्वजचिन्ह समन्वितायै नमः ५०. ॐ ह्रीं राजयोगगुणसमन्वितायै नमः ५१. ॐ ह्रीं आर्यिकाशिरोमणये नमः ५२. ॐ ह्रीं न्यायप्रभाकरपदव्यै नमः ५३ .ॐ ह्रीं शांतमुद्राधारिण्यै नमः ५४. ॐ ह्रीं परम्परासिद्ध-पर्यायसमन्वितायै नमः ५५. ॐ ह्रीं भव्यत्वगुणसहितायै नमः ५६. ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानदिवाकरप्रभायै नमः ५७. ॐ ह्रीं वीरसागराचार्यस्य शिष्यायै नमः ५८. ॐ ह्रीं युगप्रमुखायै नमः ५९. ॐ ह्रीं विघ्नसंहारिकायै नमः ६०. ॐ ह्रीं आर्षमार्गसंवाहिकायै नमः ६१. ॐ ह्रीं सिद्धान्तकल्पतरुकलिकायै नमः ६२. ॐ ह्रीं दीक्षाप्रदायिकायै नमः ६३. ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख ज्ञानमती मात्रे नमः।

एतत्त्रिषष्टिमंत्राणि, ये पठन्ति दिने दिने।
ते श्रुतज्ञानमायान्ति, चन्दनामतिरात्मनि।।१।।

❖❖❖❖❖❖

भजन

rt&efugkjk dk :i--------

'kkjn ekrk dk :i fn[kk;k]
Kku dk ru vy[k txk;kAA Vd-AA
nh{kk yrh u Fkh Dokjh dU;k ;gk]
chloh lfn e reu iFke in fy;kA
Kkuefr uke rc ru ik;k] Kku dk ru vy[k txk;kA
AA 'kkjn-AA 1AA

dkb lkfgR; jpuk u dh lk/oh u]
ldMk xUFk vc jp fn, ekr uA
dUndUn dk iFk nj'kk;k] Kku dk ru vy[k txk;kA
AA 'kkjn-AA 2AA

tu Hkxky jpuk ugh Fkh dgh]
ek= ikphu xUFkk e og Fkh dghA
tEc}hi dk :id fn[kk;k] Kku dk ru vy[k txk;kA
AA 'kkjn-AA 3AA

ftuojk dh tUeHkfe fodflr u Fkh]
ij.kk mud m)kj dh ek u nhA
_"kHk egkohj uke xtk;k] Kku dk ru vy[k txk;kA
AA 'kkjn-AA 4AA

tu lLdfr dh r bd /kjkgj g ek]
;x ;xk rd ft, r dg ^^pUnuk**A
/kjrh pkg lnk rjh Nk;k] Kku dk ru vy[k txk;kA
AA 'kkjn-AA 5AA

❖❖❖❖❖❖